

गये ब्रह्मचारी यक काला । जगन्नाथकी पुरी विशाला ॥
अरुण खम्भ यक तहँ रचवायो । अति लंबो द्वारे धरवायो ॥
सिंह पौरि महँ चहे गड़ावन । लगे बहुत जन समिति उठावन ॥

दोहा—उठो उठायो खम्भ नहिं, गये सकल जन हारि ॥

गये ब्रह्मचारी तहां, श्रीजगदीश सैभारि ॥ ३ ॥

अरुण खम्भ यक हाथ उठाई । कीन्हो ठाढ़ प्रयास न पाई ॥
पेखि पुरी जन अचरज माने । महापुरुष प्रभुको पहिचाने ॥
यहि विधि कथा अनेकनि ताकी । कहँलों कहों रही बहुबाकी ॥
मातामह जे रहे हमारे । तिनसों अस प्रभु वचन उचारे ॥
कबहुँ तोरि राज्य नहिं छूटी । जो तुव वंश प्रजा नहिं लूटी ॥
कियो विनय मातामह मोरा । कछु प्रसाद चाहौं प्रभु तोरा ॥
तब प्रभु कह्यो जो तोरि कुमारी । ताहि शिष्य तू करै हमारी ॥
तब मम मातहिं शिष्य करायो । सब कुटुंब धनि जन्म गनायो ॥
कबहुँ कबहुँ मातामह गेहू । आये नाथ किये अति नेहू ॥
सकल जगतमहँ विदित प्रभाऊ । धन्य धरा जहँ धारयो पाऊ ॥
अरुण खम्भ जगदीश दुवारे । अबलों देखहिं मनुज अपारे ॥
प्रभु जगदीश पुरी महँ जाई । सन्मुख पद्मासनहिं लगाई ॥

दोहा—सबसों कह अब तनु तजहुँ, अनमिष दृग करिदीन ॥

सबके देखत वपुष तजि, भे जगदीशहिं लीन ॥ ४ ॥

इति सिद्धि श्रीमहाराजाधिराजरवुराजसिंहजुदेवकृते श्रीरामरसि-

कावल्यां उत्तरचरित्रेषडविंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

दोहा—और भक्तकी एक अब, गाथा सुनहु सुजान ॥

अबते द्वादश वर्षभे, तबको चरित महान ॥ १ ॥

मेरी राज्य माहँ यक ग्रामा । प्राग पंथ महँ है गढ़ नामा ॥

तहँ एक काछी रह्यो सुजाना । ताको नाम दास भगवाना ॥
 बानि परी वालहिंते ताकी । करै साधुसेवा सुख छाकी ॥
 सेवत साधु वित्यो बहुकाला । अति निर्धनी दरिद्र कराला ॥
 मम एक बाग रहै तोहिं ग्रामा । वसै तहां रचिकै निज धामा ॥
 एक दिन रह्यो महाघन घोरा । वर्षन लागे देन झकोरा ॥
 चपला चमकि रही चहुँ वार्हीं । करहु पसारे स्रजत नार्हीं ॥
 नदी नार सब तजे करारा । धरणि महा धावत जलधारा ॥
 ताही दिवस मध्य अधराता । चारि साधु आये अवदाता ॥
 द्वारहिंते यहि विधि गोहराये । सुनु भगवानदास हम आये ॥
 भींजत खड़े कलेश अपारा । गये तीनि दिन बिना अहारा ॥
 तब भगवानदास उठि धायो । चारिहुँ साधु सदन पधरायो ॥

दोहा—चरके बांस निकारिकै, दीन्ह्यो धूनी वारि ॥

लग्यो अन्न खोजन भवन, कछु नहिं परचो निहारि ॥
 मान्यो अति मनमाहँ गलानी । काह करौं अब सारंगपानी ॥
 तब द्वारे एक वणिक पुकार्यो । सुनै आय इत कह्यो हमान्यो ॥
 तब भगवानदास तहँ गयऊ वणिक ताहि यहि विधि कहि दयऊ
 आये साधु भवन तुव चारी । मैं सुनि लीन्ह्यो ग्राम मैंझारी ॥
 वर्षावात जानि अति जोरा । मैंही लायों साजु अथोरा ॥
 अस कहि सघृत अन्न बहु साजू वणिक दियो तेहिं गुणि अति काजू
 तब भगवानदास अस भाखा । याको मोल काह करि राखा ॥
 बोल्यो वणिक मोल वसु आना दियो कालिह पहुँचाय मकाना ॥
 लै भगवानदास सब साजू । मान्यो अपनेको कृतकाजू ॥
 चारिहु साधुन निशा जेवायो । तिनको जूँठ आपहुँ पायो ॥
 निशा सिरानि भयो परभाता । गमने साधु रहे जहँ जाता ॥
 लै भगवानदास वसु आना । गयो वणिकके दुतहिं दुकाना ॥

दोहा—गोहराये तोहिं नामलै, दियो निशा जो साजु ॥

लीजै ताको मोल यह, कियो मोहिं कृतकाजु ॥ २ ॥
वणिक नारि तव तहँ कटि आई । बोली कोपि गयो बौराई ॥
दश दिनभे पति गयो प्रयागा । मैं जानौं नहिं को केहिं मांगा ॥
जब पति ऐहँ तव तुम दीजै । विन जाने कैसे हम लीजै ॥
नारि वचन सुनि विस्मित भयऊ । तब भगवानदास घर गयऊ ॥
दश दिन बीते वणिक सिधार । नारि सकल वृत्तांत उचारा ॥
तब भगवान गये घर माहीं । आयो विस्मित वणिक तहांहीं ॥
कह भगवानदास सुनु भाई । दियो साजु जो निशि महँ आई ॥
तुमहिं मोल भाष्यो वसु आना । सो लीजै किय काज महाना ॥
वणिक कह्यो हों गयो प्रयागा । कहत कहा तोको कोउ लागा ॥
विंशत दिन बीते घर आयों । तेरे पास साजु कब लायों ॥
सुनि भगवानदास भरि लाजू । जान्यो सत्य अहै यदुराजू ॥
दीनदयालु दीन सुधि लीन्ह्यो । मम हित हाय महाश्रम कीन्ह्यो ॥

दोहा—अस विचारि तुरतहिं तज्यो, गोत्र कलत्र कुटुम्ब ॥

भो विरक्त अति भवनते, विचन्यो लैकर तुम्ब ॥ ३ ॥
मैं जब यह सिगरी सुधि पायों । तुरत साधुको खोज करायों ॥
ईश्वरजीत यक मम सरदारा । धीर वीर हरिदास उदारा ॥
तासों कह्यो तुरंत बोलाई । तुम भगवानदास लै आई ॥
राखहु अपने अयन मझारी । करहु तासु सेवा सुखकारी ॥
ईश्वरजीत तुरंतहि धायो । सादर साधु चरण शिरनायो ॥
पुर वैकुंठ नाम तेहि ग्रामा । लायो ताहि मानि सुखधामा ॥
तबते अचल दास भगवाना । वसि वैकुंठ पुरै मतिवाना ॥
अबलों करै साधु सेवकाई । रमे समके रंग महाई ॥
काम क्रोध मद लोभहुँ मोहू । कबहुँ न परशत गुणि हरिछोहू ॥

जब मम भवनमाहँ सुख चाहा । होत जानकी व्याह उछाहा ॥
तब मोहिं करन सकल कृतकाजू । पगु धारत मधि संत समाजू ॥
जितने साधु तासु गृह आवैं । जबलों रहैं सुभोजन पावैं ॥

सोरठा—साधु दासभगवान, अबलों अछत विकुंठपुर ॥

भाव सहित भगवान, भजै भीति भव भानि भल ४ ॥

इति सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरवुराजसिंहजूदेवकृतेश्री

रामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

दोहा—एक साधुको चरित अब, श्रोता सुनहु अनूप ॥

रह्यो देश पंजावमें, एक नगरको भूप ॥ १ ॥

खेलन हेतु अखेट अपारा । गयो उत्तराखंड पहारा ॥
तहँ यक साधु मिल्यो बनमाहीं । भयो तासु सत्संग तहांहीं ॥
तबते नगर कोश परिवारा । तज्यो धाम धन वाम कुमारा ॥
कृष्णदास निज नाम धराई । वागन लग्यो मही सुखछाई ॥
करमें लीन्हें विमल सितारा । जय जय कृष्णहिं करत उचारा ॥
नाचत गावत कांपत अंगा । क्षण क्षण रंगत कृष्णके रंगा ॥
संवत उनइससै अरु बीसा । काशी गयो सुमिरि जगदीशा ॥
समला शिर जामा तनुमाहीं । जय जय कृष्ण कहत चहुँ वार्हीं ॥
क्षुधा पियास नींद विसराये । विचरन लग्यो प्रेम रस छाये ॥
पग घूँघुरू होत झनकारी । गावाहिं सूर सुपद मनहारी ॥
सो विचरत विचरत यक साला । मणिकर्णिका गयो यक काला ॥
तेहि क्षण लोथि जरावन हेतू । लाय चिताको किय कोउनेतू ॥

दोहा—विरचि चिता तेहिं मृतकको, दीन्ह्यो आसु चढ़ाय ॥

पावक दियो लगाय पुनि, बढी ज्वाल समुदाय ॥

कृष्णदास निरत चहुँ वार्हीं । चिता समीप गये क्षण माहीं ॥ १ ॥
तेहिं घरके वारण तेहिं कीन्हें । वचिहौ नाहिं चिता छुड़दीन्हें ॥

कृष्णदास तब कह सुसक्याई । दीजै याको नाम बताई ॥
 कृष्ण चरण याको है नामा । दियो बताय कौनहै कामा ॥
 यह सुनि जयजयकृष्ण उचारी । कूदिपरे तेहि चिता मँझारी ॥
 नाचनलगे लोथि पर जाई । सक्यो न पावक नेकु जराई ॥
 नचे दंड दुइलगे तेहि माहीं । लै सितार गावत पदकाहीं ॥
 कूदिचले पुनि औरी ओरा । देखतभे जन सबै करोरा ॥
 सबै परे पाँयन प्रभुकेरे । निज अभिलाष कहे बहुतेरे ॥
 जानि उपद्रव तहँ अति भारी । चले पराय तुरत तपधारी ॥
 मिरजापुर आये तेहि राता । विचरत पद गावत अवदाता ॥
 जैपुरको राजा तेहि काला । मेरो भाम विभूति विशाला ॥

दोहा—सो विंध्याचल अंविका, आयो दरशनहेत ॥

तासु मिलन हित मैं गयो, विंध्याचल सुखसेत ॥२॥

मिरजापुर भहँ परम सुजाना । महिसुर एक दासभगवाना ॥
 नाम भक्त माली विख्याता । राम अनन्यदास अवदाता ॥
 सदा सकल देशन महँ जावै । भक्तमाल सब भाँति सुनावै ॥
 करि करि रामतत्त्व उपदेशा । हरहि महाभव भीति कलेशा ॥
 रामरसिक परमारथ पूरे । चतुर उदार शील रस रूरे ॥
 मेरे नगर रहै बहुधाई । मानहिं मोहिं वंधुकी नाई ॥
 तिनहिं भक्तमालीके आलै । आये कृष्णदास यक कालै ॥
 कियो भक्तमाली सत्कारा । आसु मोहिं चलि वचन उचारा ॥
 महानुभाव भागवत पूरे । आये एक साधु अति रूरे ॥
 भाग्य विवश तिन दर्शन कीजै । अपनो जन्म धन्य गनि लीजै ॥
 मैं कह केहि विधि दर्शन पाऊं । सो कह विनती करि इत लाऊं ॥
 अस कहि करि विनती बहुतेरी । अभिलाषा पूरी किय मेरी ॥

दोहा—कृष्णदासको दरश करि, मैं हूँ भयों सनाथ ॥

विनय कियो रीवां चलहु, धरहु हाथ मम माथ ॥ ३ ॥
 सो कह तैं साँचो मम दासा । कवहुँक ऐहों मैं तुव वासा ॥
 अबै गंगसागर कहँ जाऊँ । तहँते पलटि पुरी तव आऊँ ॥
 अस कहि हरिपद गावत धीरा । विचरन लागे गंगा तीरा ॥
 यक दिन एक महाजन सूना । मरिगो किय अपनो घर सूना ॥
 घरमें रही तासु यक माता । तीनिलाखसम्पति अवदाता ॥
 मन्यो निशा जब भयो प्रभाता । चले जरावन लै सब भ्राता ॥
 कृष्णदास गंगाके तीरा । लखे सकल जन महा अधीरा ॥
 लागि दया बोले असि वानी । मति मानहु अब मनहिं गलानी ॥
 हम आधी जो सम्पति पैहैं । तौ याको जिआय इत दैहैं ॥
 कह्यो मातु तेहिं परि पद माहीं । सिगरी सम्पति लेहु यहांहीं ॥
 कृष्णदास तब लोथि धराई । नाचनलगे सितार बजाई ॥
 मिरजापुरके मनुज हजारन । खड़े तमाशा लगे विहारन ॥

दोहा—कृष्णदास गावत भये, निरम्यो जो पद सूर ॥

सो मैं इत लिखिदेतहैं, मानि महासुद पूर ॥ ४ ॥

पद—हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो ॥

समदरशीहै नाम तिहारो ऐसहिं पार करो ॥

यक लोहा पूजामें रहतो यक घर बधिक परो ॥

यह दुविधा पारस नहिं जानत कंचन करत खरो ॥

यक नदिया यक नार कहावत मैलो नीर भरो ॥

जब मिलिगो तब एक वरणभो सुरसरि नाम परो ॥

यक माया यक ब्रह्म कहावत सूरश्याम झगरो ॥

की याको निरवार करो प्रभु नहिं प्रण जात टरो ॥

दोहा—यह पद गायो प्रेम भरि, नयनन आंसु बहाय ॥

उम्यो कुमार तुरंत जनु, सोवत दियो जगाय ॥ ५ ॥

॥मरजापुर वासी जन जेते । अति अचरज माने मन तेते ॥
 रही जो तासु सुवनकी माई । तीनि लाख धन दियो मँगई ॥
 कृष्णदास आधो लै लीन्ह्यो । तुरतहिं साधुन विप्रन दीन्ह्यो ॥
 आधो ताको दियो उदारा । करन हेतु पूंजी रोजगारा ॥
 गंगासागर आप सिधारे । गावत कृष्णचरित्र सितारे ॥
 मिल्यो एक साहेब मग माहीं । सो कह मग छोंड़त कत नाहीं ॥
 अस कहि कोड़ा हनन उवायो । हाथ उठावत भूमिहिं आयो ॥
 भयो शोर कोउ यक वैरागी । गयो मारि साहेबको भागी ॥
 जज्ज कलट्टर खोज करायो । कृष्णदासको कतहुँ न पायो ॥
 साहेब रुधिर वमत अति सोई । मगमहँ मरचो लख्यो सब कोई ॥
 तिनके और चरित्र अपारा । मैं नहिं लिख्यो मानि विस्तारा ॥
 यह चरित्र बहु दिनको नाहीं । वीत्यो संवत एक यहाँहीं ॥
 दोहा—यह मेरो देखो सुनो, मानहु मृषा न कोय ॥

भगवत अरु भागवतको, चरित मृषा नहिं होय ॥६॥

इति सिद्धि श्रीमहाराजाधिराज श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसि-
 कावल्यांकलियुगखंडे उत्तरचरित्रे अष्टविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

दोहा—रामसखेको चरित अब, वर्णन करों अपार ॥

अहै विदित सब जगतमें, कोकहि पावै पार ॥ १ ॥

जैपुरदेश जन्म प्रभु लीना । बालहिंते रघुपति रस भीना ॥
 तजे भवन धन कुल परिवारा । आये अवध अनंद अपारा ॥
 कछु दिनकियो अवधपुर वासा । आये चित्रकूट सहुलासा ॥
 रहै शिष्य यक तिनके संग । लावै भोजन मांगि असंगा ॥
 दश मूरतिकी बनै रसोंई । आयपरैं वैष्णव बहुतोई ॥
 रघुपति कृपा करें सब भोजू । रहै कारखानो यह रोजू ॥

राम उपासक द्वितिय न ऐसो । रामसखे प्रगटो जग जैसो ॥
चित्रकूट करि कछु दिन वासा । मैहर आये सियवर आशा ॥
अति रमणीय तौन थल भायो । रहन हेतु तहँ कुटी बनायो ॥
करहि ध्यानमहँ विपुल भावना । जैसी छविकी होय कामना ॥
ध्यानहिमहँ यक दिन रस रांचे । राम भोग बनवत चित सांचे ॥
जो व्यंजन मनमाहँ बनायो । सो तोहिं समय प्रगट ह्वै आयो ॥

दोहा—यक साधू आयो हुतो, तहँ दरशनके हेत ॥

सो सांचो व्यंजन निरखि, बोल्यो विस्मित चेत ॥ १ ॥
ध्यान करत व्यंजन कहँ पायो । रामसखे तब वचन सुनायो ॥
तुम कहियो कोहुसों यह नार्ही । जानै कौन ईश गति काहीं ॥
यक दिन यक आई तहँ बाई । भई शिष्य सुंदरि मति पाई ॥
शीलमती तेहिं नाम धरायो । ताको अस वरदान सुनायो ॥
वांचै भक्तमाल भरि प्रेमा । ह्वैहै तेरो सब विधि क्षेमा ॥
साधु समाज उजागर ह्वैहै । जहँ जैहै सुंदर यश पैहै ॥
तैसहि भई शीलमति बाई । रामसखी सी सत्य सुहाई ॥
मैंहूँ ताको दर्शन पायों । तेहि आचरण यथाश्रुति गायों ॥
यक कायथ आयो इक काला । हाथ कटे अति रह्यो विहाला ॥
ताहि दुखी लखि दिय वरदाना । लिखु सिंगरो तैं ग्रंथ प्रमाना ॥
दोऊ ठूठे हाथनमार्हीं । लैलिखनी लिखु ग्रंथन काहीं ॥
ठूठे हाथन लै लिखनीको । लिखन लग्यो सो अक्षर नीको ॥

दोहा—दियो चित्रनिधि नाम तेहिं, भयो चित्रनिधि सत्ति ॥

विदित चित्रनिधिकी अहै, जगमें जाहिरवृत्ति ॥ २ ॥
गनीवेग सूबा यक रहेऊ । सो चलि रामसखे पद गहेऊ ॥
षट सहस्र अरप्यो सो मुद्रा । ग्रहण कियो नहिं गनि अति छुद्रा ॥
विनय कियो दीनता देखाई । पांचहिं रुपया लियो उठाई ॥

एक साधुको द्रुत दौराख्यो । घरको जाहु ताहि अस भाख्यो ॥
 जानहिंराग रागिनी भेदा । गान करहिं जस विधि कह वेदा ॥
 ध्रुपद ख्याल टप्पा पद हूरे । रचहिं रामके प्रेमहिं पूरे ॥
 एक समय यक पदहिं बनायो । आयो गायक ताहि सिखायो ॥
 गायक सो लखनऊ सिधारा । गायो सो नवाब दरबारा ॥
 सुनत नवाब रीझिअति गयऊ । पूछ्यो केहिं मुख निर्मितभयऊ ॥
 गायक कह्यो साधु यक अहर्ही । रामसखे मैहरमहँ रहर्ही ॥
 ते अस अस पद बहुत बनाये । अगणित गायक बोलि सिखाये ॥
 सो पद मैं इत देहुँ लिखाई । रसिकनको अतिशय सुखदाई ॥

राग कान्हरा बड़ो ताल—प्यारे तेरी छवि पर वारियाँ ॥ छूटी
 वदन कुँवर दशरथके मारत जुलफैं कारियाँ ॥ तीखी सजल
 लाल अंजनयुत लागत आँखें प्यारियाँ ॥ रामसखे दृग ओढन
 हमको करो न क्षण भरि न्यारियाँ ॥ १ ॥ येरी कोऊ मोहिं बताओ
 देखे कहूँ राम सुजान ॥ नृत्यत हँसत रासमंडलमें हँगे अंत-
 र्ध्यान ॥ मणि विन नाग मीन ज्यों जल विन तलफत त्यों मम
 प्रान ॥ रामसखे जो आनि मिलावै देहि सो अब जियदान ॥ २ ॥

दोहा—तब नवाब निज नाजिरै, पठयो प्रभुके पास ॥

यहि विधि विनती करतहौं, मोको देहु हुलास ॥ ३ ॥
 रामसखे लखनऊ जो रहर्ही । मुद्रा लाख वर्षप्रति लहर्ही ॥
 नाजिर आय कह्यो परि पाँयन । जस नवाब विनती किय चायन ॥
 कह्यो सखेजू तब हँसि वानी । कोशलनाथ भँडार न हानी ॥
 देखहु तुम सियनाथ भँडारा । कमती नहिं कौनहू प्रकारा ॥
 नाजिर चलि भँडार तब पेख्यो । कोटिनकी सम्पति तहँ देख्यो ॥
 विस्मित भयो चरण शिरनायो । जाय नवाबहि सकल सुनायो ॥
 रामसखे अस विदित प्रभाऊ । गाय चरित को करै अघाऊ ॥

मैं यक सूचन भरि लिखिदीन्हा । सबचरित्र वर्णन नहिं कीन्हा ॥
 शंकरमाध्व सुमत विस्तारा । रामानुज मत विदित अपारा ॥
 गौडेश्वर आदिक मत केते । तिनके शाख प्रशाखहुँजेते ॥
 श्रुति सम्मत तिनके मधिमाहीं । फैलायो निज मत चहुँवाहीं ॥
 भये शीलनिधि रामसखे शिषि । द्वितिय चित्रनिधि भयोमनो ऋषि
 दोहा—तीजो शिष्य सुजान भो, नाम सुशीलादास ॥

तिनके शिषि जानकेशरण, जेहिं यश जगत प्रकाश ४
 अवधशरण तिनके शिषिभयऊ । बुध विरक्त ज्ञानी जग ठयऊ ॥
 भयो शीलनिधि शिष्य सुजाना । रघुवरशरण नाम जग जाना ॥
 तिनके शिष्य प्रशिष्यनमाहीं । सहसनहैं सब देशन पाहीं ॥
 यकते एक अधिक परवीना । राम उपासक हरि रस भीना ॥
 कहँलों कहों चरित तिनकेरे । मैं लघुमति परभाव धनेरे ॥
 श्रोता तुमहु सुने सब हैहौ । पूंछि सकल संतनसों लैहौ ॥
 दम्पति रघुपति सीयउपासी । रुचिर रीति रासहिं रसआसी ॥
 रामसख संप्रदा प्रभाऊ । को अस जगमहँ जाहि दुराऊ ॥
 महानुभाव रामके प्यारे । होहिं संत मतिमान उदारे ॥
 सखी सखोके सदा उपासी । रामरूप पाणिपके आसी ॥
 अबलों मैहर माहँ अखारा । तासु प्रभाव विदित संसारा ॥
 तासु सम्प्रदाके बहु संता । राम उपासक अवधवसंता ॥

दोहा—है अबलों देखो सुनो, तिनके अमित प्रभाव ॥

रसिक संत मतिवंत सब, जानहिं सकल स्वभाव ॥५॥
 इति सिद्धि श्रीमहाराजाधिराज श्रीरघुराजसिंहजूदेवरुते श्रीरामरसिका
 बल्यांकलियुगखंडे उत्तरार्द्धे उत्तरचरित्रे एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २ ॥

दोहा—औरहु संतनकी कथा, वर्णहुँ परम विचित्र ॥

जाहि सुनत सब जनन हिय, होते परमपवित्र ॥ १ ॥

शहर लखनऊ परम ललामा । तहँ रघुनाथदास सुखधामा ॥
 करहिं चाकरी साहेबकेरी । राम नाम पर प्रीति बनेरी ॥
 पहर एक बाकी निशि जानी । उठि सुमिरहिं नित सारँगपानी ॥
 यहि विधि विपुल काल चलिगयऊ । साहेब पहरा बदलत भयऊ ॥
 इनको कह्यो हुकुम सुनिलेहू । शेष राति पहरा तुम देहू ॥
 तब रघुनाथहि संकट गयऊ । भजन समय पहरा अब भयऊ ॥
 तब यक मित्रहि कह्यो बुझाई । तुम हमरी बद् पहरै जाई ॥
 आठ दंड निशि रहे प्रवीना । ठाढ रहहु गहिकै संगीना ॥
 जोयहि विधि उपाय तुमसाधा । तौ मम भजन होय नहिं बाधा ॥
 तब सो सीख मानि मुदमाहीं । पहरा देन गयो तेहि ठाहीं ॥
 कछुक दिवश बीते यहि भांती । चुगुल बुझायो साहेब राती ॥
 सो सुनि साहेब अति मनमाषा । पहरा देखन किय अभिलाषा ॥
 पहरावारेहु यह सुधि पायो । साहेब डर तेहि राति न आयो ॥

दोहा—पति राखन निज दासकी, पथरकला गहि हाथ ॥

धारि रूप रघुनाथको, आयगये रघुनाथ ॥ १ ॥

रुचिर तिलंगहि वेष बनाये । पहरा हित संगीन चढ़ाये ॥
 नेति नेति जेहि वेदन गायो । पहरा देन नाथ सो आयो ॥
 मंद मंद टहलत तेहि ठाहीं । आय गयो साहिबहु तहांहीं ॥
 रघुनाथहि लखि अति मुदवाढो । चुप ह्वै साहेब रहिगोठाढो ॥
 तब प्रभु साहेबको गोहरायो । नहिं बोल्यो तब तुपक चलायो ॥
 साहेब लौटिगयो गृह माहीं । भोर बोलि रघुनाथहि काहीं ॥
 निशिको सब वृत्तांत सुनायो । तब रघुनाथदास अस गायो ॥
 मैतो पहरा हित नहिं आयो । नहिं जानो को तुपक चलायो ॥
 साहेब मन अति विस्मय पायो । को तुव रूप धारि निशि आयो ॥
 तब इन जान्यो ममहित लागे । धारि संगीन राम अनुरागे ॥

त्यागि चाकरी सुत वित वामा । अवध वास कीन्ह्यो अभिरामा ॥
 रामघाटमहँ कुटी बनाई । सेवत संतन अति सुखछाई ॥
 सहसन संत कुटीमहँआवैं । मनवांछित भोजन सब पावैं ॥
 मेरेहु मन अभिलाष सदाहीं । कब देखौं प्रभु दर्शन काहीं ॥
 दोहा—मैं कहँलों वर्णन करहुँ, चरित दास रघुनाथ ॥

जेहि के हित अवधेश सुत, लियो तुपक निज हाथर ॥
 रामदास तपसी सुखरासी । अवध वास किय जगत निरासी ॥
 सरयुतीरके भये निवासी । भजन कियो सरयू हित खासी ॥
 भक्त जानि झाकी तिन्ह दीन्ही । विनती रामदरश इन्ह कीन्ही ॥
 राम दरश दुर्लभ कलि माहीं । मातु कही तोहिं दुर्लभ नाहीं ॥
 नौमी कहँ दरशन तुम पैहौ । परम अलभ्य लाभ जग लैहौ ॥
 जवाहिं रामनौमी दिन आयो । दश दिशि धुंधुकार नभ छायो ॥
 सहसन हय गय सजे श्रृंगारा । तिन्हपर रघुवंशी सरदारा ॥
 चारहु भाय परम छवि छावत । आये सन्मुख वाजि नचावत ॥
 कोउ भूपतिकी सैन्य अपारा । नेकु चितै पुनि दियो केंवारा ॥
 सरयु वचन गुणि करत विचारा । पुनि जब देख्यो खोलि किंवारा ॥
 एको जन नहिं तहां निहारयो । तब अति अचरज उरमहँ धारयो ॥
 पुनि सरयूके निकट सिधाये । सरयू कह्यो दरश तुम पाये ॥

दोहा—अब संतन सेवहु मुदित, पैहो सब मन काम ॥

इन कह कैसे सेइहौं, धन नहिं मेरे धाम ॥ ३ ॥
 देहैं धन सरयू अस कहेऊ । संतसेव मारग इन लहेऊ ॥
 सेवत संतन बढ्यो प्रभावा । सहसन जन नित द्रव्य चढ़ावा ॥
 एक दिन संत गये अधराता । साजु सबै घृत नाहिं लखाता ॥
 तब सरयूपहँ गिरा सुनाई । घृत दीजै संतन हित माई ॥
 अस कहि गगरा भरि जल लाये । डारि कराहीं घृत सब पाये ॥

एक दिवश बैठे निज आसन । आये संत कछू धन पासन ॥
सहसन संत देखि सुख पाये । तुरत धाय सरयू पहुँ आये ॥
भरि तुंवा सरयू रज आनी । उलदत मुहरैं सब कोउ जानी ॥
यक दिन बैठे रज महँ जाई । सरयु वाढ़ि चहुँदिशिते आई ॥
जहँ बैठे तहँ जल नहिँ आयो । देखत सब जन विस्मय पायो ॥
ऐसे चरित अमित तिनकेरे । दयादृष्टि जीवन पर हेरे ॥
अंत समय चढ़ि विमल विमाना । प्रमुदित गये लोक भगवाना ॥

दोहा—संत सेव परभाव अस, जानहु जन सबकोइ ॥

शम दमादि साधन विना, राम धाम पथ होय ॥ ४ ॥

मनीराम तजि सुत वित धामा । अवध वास कीन्हो अभिरामा ॥
संतन सेव रीति गहि लीन्ह्यो । यह उपदेश शिष्यहुँन कीन्ह्यो ॥
छतिस पाठ रमायण केरे । करहिँ सालप्रति सरयू नेरे ॥
सेवत सेवत संतन काहीं । पंद्रासै ऋणभयो तहांहीं ॥
तब सरयूके निकट सिधाई । ऋणकी बात गये सब गाई ॥
तब सरयू अस युक्ति बतार्ई । युग मटुका कुठरी महँ लाई ॥
तिन्ह मटुकन ते द्रव्य निकारहु । अपनो ऋणसिगरो दैडारहु ॥
शासन सुनत तैसही कीन्ह्यो । लाखन संतन भोजन दीन्ह्यो ॥
तिन्हके शिष्य वैष्णवदासा । वही रीति अब करत प्रकासा ॥
शीलमणीभे संत प्रधाना । कनक भुवन तिनको स्थाना ॥
रामसखेके शिष्य सुजाना । दिनप्रति करहिँ मानसी ध्याना ॥
यक दिन ध्यान मानसी माहीं । कछुक हासरस भयो तहांहीं ॥
भागि नाथ कढ़िगये दुवारा । अरइयो पाग निंबुकी डारा ॥

दोहा—लगे करन पोशाक तब, शिर पगड़ी नहिँ पेखि ॥

मंदिरके बाहेर निकसि, निंबूके तरु देखि ॥ ५ ॥

ऐसहि मांडवि शरणभे, कनकभवन स्थान ॥

संत सेइ हरिदरश लहि, लीनभये भगवान ॥ ६ ॥

ऐसे तिन्हके भाव न गुनहूँ । कृपानिवास चरित अब सुनहूँ ॥
 दक्षिणके भूपतिके भाई । प्रीति पररूपर अति सुखदाई ॥
 एक दिन गे भाभीके गेहूँ । तासों मानत रहे सनेहूँ ॥
 सिखवतरहे भजनकी रीती । राजहु आय कह्यो असि नीती ॥
 नारिनसों एकांतहि माहीं । कबहुँ वचन बोलिये नाहीं ॥
 कृपानिवास कही तब वाता । नारि नारि ढिग दोष न भ्राता ॥
 भूप कोपि तब वचन सुनायो । नारिवेष इन प्रगट देखायो ॥
 तब राजा बोल्यो शिरनाई । तुव महिमा अब जान्यों भाई ॥
 कृपानिवास भजन जे गाये । रूपाशक्त रीति दरशाये ॥
 फैलिरहे जिन्ह भजन अपारे । रसिक जनन सुनि लागत प्यारे ॥
 रूप सखीभे भक्त महाना । दिछी तासु रह्यो स्थाना ॥
 दिछीके दिवानके बेटा । काहूसों न करै कहूँ भेटा ॥
 दशषट् वर्ष वचन नाहिं बोले । बादशाह कह वचन अमोले ॥

दोहा—वचन उचारहु भांति जेहिं, सो तुम कहहु सुजान ॥

जो न कहहु तौ देहु लिखि, सो हम करव निदान ॥

मम बोलन उपाय तुम पूछे । लिखेदेत सुनि परेहु न छूछे ॥
 दशकरोरि मुद्रा तुम लावहु । नारायण उत्सव करवावहु ॥
 बाँचि शाह दश कोटि मँगाई । रूपसखी ढिग दियो धराई ॥
 तब प्रभु होरी समय विचारी । मौन रीति करि दीन्ही न्यारी ॥
 नृत्य वाद्य अरु गानहु माहीं । जे जे गुणी सुने भुविमाहीं ॥
 तिन सबको तुरंत बोलवायो । दशहजार बालकन सिखायो ॥
 वर्षरोजभर लीला भयऊ । पूरण भये त्यागि तनु दयऊ ॥
 प्रेमसखीभे गंगापारै । तिनके चरित अमित सुख सारै ॥
 एक समय श्रीरामप्रसादै । शाह कह्यो मन अति अहलादै ॥

जस तुम तस कोउ द्वितिय बतावहु । मेरे मन अति मोद बढ़ावहु
तब इन प्रेमसखीको भाष्यो । पारिख लेन शाह अभिलाष्यो ॥
सवालाखकी खिलत पठाई । प्रेमसखी लखि तुरत फिराई ॥
मेरे ठाकुर अवधविहारी । ठकुराइन मिथिलेशकुमारी ॥

दोहा—तिनको तू देखरावतो, तुच्छ विभव अधिकार ॥

रवि सन्मुख कहँ सोहतो, उडुगण तेज प्रकार ॥८॥

पुनि तिन एक कवित्त कहँ कीन्ह्यो । सोकवित्त में इत लिखिदीन्ह्यो

कवित्त—चंचलतासिगरी तजिकै थिरहै न रहो यह वातभलीहै

सेव सियापदपंकजधूरि सजीवनमूरि विहार थलीहै ॥

बारहिंबार पुकार कहै अपने मनकी अब प्रेम अलीहै ॥

ठाकुर रामलला हमरे ठकुराइन श्रीमिथिलेश लली है ॥ १ ॥

फत्तेपुर एक ग्राम सुहायो । तहँ बलरामदास सुख छायो ॥

एक दिन युगल साधु गृह आये । तिनको सादर अशन कराये ॥

जात समय तिन किय उपदेशा । संतन सेव किहेहु तुम वेशा ॥

सेवत सेवत संतन गाढ़ो । तिनके गृहमें धन बहु बाढ़ो ॥

सदावर्त्त तिन तीनि चलाये । राम भरोस सदा उर लाये ॥

चित्रकूट अति रुचिर ललामा । तहँ वनश्यामदास सुखधामा ॥

संत जनन सेवन परिपाटी । करहिं सदा कछु परै न घाटी ॥

दिन प्रति संत तहां चलि आवैं।करि भोजन अति आनँद पावैं ॥

आठ दंड बाकी निशिमाहीं । जागि भजन करते सुखमाहीं ॥

श्रीमन्नारायण उच्चारन । होत रहत मंदिरप्राति वारन ॥

श्रीभागवत और रामायण । होत त्रिकाल तासु पारायण ॥

दोहा—राखत नेह गरीब सों, तुरत उठत मिलि धाय ॥

ताते श्रीघनश्यामको, रह्यो विमल यज्ञ छाय ॥ ९ ॥

नागाबाबा हरि उर ध्याये । रहैं कडे महँ कुटी बनाये ॥

योगाभ्यास रीति सब जानै । संतसेवमहँ परमसयानै ॥
 कड़े शहरवासी नित आवैं । ते प्रभुके परचै बहु पावैं ॥
 संध्या तक दर्शन सब लेहीं । राति रहन काहू नहिं देहीं ॥
 एक दिन कोउ देखनके हेतू । आधीराति गयो मतिसेतू ॥
 बाबाके कर पद अरु शीशा । कटे परे अबनी त्याहिं दीशा ॥
 तब गोहारि मारत सो भयऊ । बाबाको कोउ वध करि गयऊ ॥
 बाबा उठे अंग सब जोरी । कहियो कहुँ न बात यह मोरी ॥
 रामसनेही अति अभिरामा । येऊ किये कड़े महँ धामा ॥
 संतन सेव रीति गहि लीन्ही । याचन वृत्ति त्यागि सब दीन्ही ॥
 तब सब लोग दरशहित जाहीं । पूजा भेट देहिं तेहि ठाहीं ॥
 जो गुरुमुख पूजा तेहि लेहीं । गुरुते विमुख त्यागि तेहि देहीं ॥
 दोहा—झूठ वचन बोलैं नहीं, करैं सदा हरिध्यान ॥

आप अमानी औरको, देते मान महान ॥ १० ॥

पश्चिम देशहिमें भये, लाला भक्त सुजान ॥

मैलाग्राम निवास जिन्ह, जानत सकल जहान ॥ ११ ॥

एक समय शुभ कातिक मासा । निज गृह बैठेहुते हुलासा ॥
 पिता वचन अस कह्यो तहांहीं । साधुन कियो दंडवत नाहीं ॥
 कहि पितु गो एक ग्राम सिधाई शत समाज खाखिनकी आई ॥
 लाला भक्त दंडवत कीन्ह्यो । संतन संतसेवि लखि लीन्ह्यो ॥
 इन कह तुमहिं न शीत सतावै । उन कह असको वसन उढावै ॥
 तब ये तुरत धाम महँ धाये । शत लोई शत संत उढाये ॥
 राग भोग हित अति सुखभीने । चालिस मुद्रा तिन्हको दीने ॥
 कह्यो शहर बाहेर एक बागा । पाक करहु तहँ युत अनुरागा ॥
 पिता मोर जो यह सुधि पावै । तौ मोकहँ बहु त्रास देखावै ॥
 संत मये उत इत पितु आयो । सुनि हवाल मारनको धायो ॥

लाला भागि विपिन महँ आये । संतवेष हरि वचन सुनाये ॥
कहो पितासों अस तुम भाई । गनिलीजै लोई गृह जाई ॥
जेहि भुशुंडि निज मानस ध्यायो । भक्तकाज सिखवन बनआयो ॥

दोहा—लाला सुनि साधू वचन, दृढ़ विश्वास हिय लेखि ॥

आय पितासों कहत भो, लोई लेहु सरेखि ॥ १२ ॥

कमै तौ दंड मोहिं पितु दीजै । पूर भये कत रोषहि कीजै ॥
पिता जाय गृह सरखत कीन्ह्यो । लोई एक अधिक गनिलीन्ह्यो ॥
लखि अचरज सबहिन शिरनायो । संत प्रभाव देश दरशायो ॥
संत अनंत तहां चलि आवैं । पूरी सब भोजनको पावैं ॥
एक समय तहँ संत जमाती । भूखे हम अस टेन्यो राती ॥
दुइ दिनते हम अन्न न पायो । तब इनके संतन अस गायो ॥
आसन कीजै पाक बनावहिं । तब तुमको हम अशन करावहिं ॥
तब तिन्ह बारबार गोहराई । प्राण हमार कटत अब भाई ॥
लालाभक्त सुनत उठिधाये । निज साधुनसों वचन सुनाये ॥
व्यारी हित पेरा जे आये । देहु सबै संतन सुख छाये ॥
सात सेर पेरा कछु घाटी । कहहु देहु सब संतन बांटी ॥
आपुहि चलि दीजै सबकाहीं । हमसों बांटत बनिहै नाहीं ॥

दोहा—तब लाला उठिकै तुरत, सब संतन दिय बांटी ॥ १३ ॥

सेर सेर पेरा दिये, काहुहि पन्यो न घाटि ॥

गंगा गऊ मरीकेहु काला । दिय जियाय सुमिरत नँदलाला ॥
वसह एक वाणीको मरेऊ । अति ममत्व ताके पर रहेऊ ॥
लालाभक्त पास सो जाई । अति विनीत है गिरा सुनाई ॥
बैल विहीन देह नित छीजै । वसह जिआय नाथ यश लीजै ॥
लाला कह मोसों धन लेहु । और बैल तामें लैलेहु ॥
सो हठि परचो न मानत बाता । दोउ कर गहे चरण जलजाता ॥

तब करि दया राम उर ध्याई । बैलहि दीन्ह्यो तुरत जियाई ॥
 जय जय शब्द सभामहँ छायो । संत महंत सबन शिरनायो ॥
 एक समय रामतके काजा । चले आप सँग संत समाजा ॥
 एक ग्राम आये सुख छाई । तहँके जन आये सब धाई ॥
 करि सत्कार बागमहँ लाये । राग भोग संतन करवाये ॥
 एक चेटकी तेहि पुर गयऊ । प्रेत सिद्ध कीन्हे सो रहेऊ ॥
 नारायणको रूप बनावै । प्रेतहि प्रीर रूप बोलवावै ॥
 लालाभक्तहि सभा मँझारी । कोउ जन तहँ अस गिरा उचारी ॥

दोहा—एक साधु आये इतै, महिमा कही न जात ॥

नारायणको रूप प्रभु, ह्वै प्रत्यक्ष बतरात ॥ १४ ॥

तहां भीर होती अतिभारी । शिषि ह्वैगे इतके नर नारी ॥
 लाला भक्त सुनत दुख माने । जानि चेटकी अति पछिताने ॥
 यदुनंदन ध्यावहुँ दुखमोचन । दरश हेतु ललकत दोउ लोचन ॥
 वेद भेद जाको नहिं पावै । सो प्रत्यक्ष कैसे बतरावै ॥
 चेटकि चेटक करत कराला । देहुँ छुड़ाय सुमिरि नँदलाला ॥
 करत विचार नाथ मन माहीं । मरचो सेठको पुत्र तहांहीं ॥
 सरित तीर ताको लैआये । लालाभक्त तुरत उठि धाये ॥
 तिन सब ठगन तुरत बोलवायो । सहसन जन माधि वचन सुनायो ॥
 जो सतिनारायण बतवावहु । सेठ पुत्र तौ तुरत जियावहु ॥
 सेठ पुत्र जो देहु जियाई । हम सब शिष्य होव तुव आई ॥
 नहिं जीवै तौ प्रण सुनिलेहू । सहित समाज शिष्य तुम होहू ॥
 तब चेटकी कह्यो दुखमाहीं । पुत्र जियावन मम गति नाहीं ॥

दोहा—आप जियावहु पुत्र जो, तौ हम सेवक होव ।

सकल सभाके लखत तुव, जूता शिरधारि सेव ॥ १५ ॥

नाथ ध्याय उर दशरथ लाला । दियो जियाय सेठको बाला ॥

सेठ आय धन विपुल चढ़ायो । पुरवासिन सब शिष्य करायो ॥
 पुनि चेटकिको दै उपदेशा । कियो भक्त यदुपतिकोवेशा ॥
 एक समय इक खाखी आयो । सोतौ ऐसो वचन सुनायो ॥
 सब संतन दै बड़ यश लेहू । कछुक वस्तु हमहूँको देहू ॥
 लालाभक्त कह्यो मुसक्याई । होहि सो देहूँ तुमहिं जो भाई ॥
 कठिन बात तब साधु सुनाई।आपनि भगिनि देहु मोहिं लाई॥
 भक्तराज तब भगिनि बोलायो। ताको बहु प्रकार समझायो ॥
 रुचिर पालकी तुरत सजाई । गहना बहुत दियो पहिराई ॥
 बसन अमोल भगिनि कहँदीन्हे। नेहरीति सब भेटहि कीन्हे ॥
 सब तिय मिलि पालकीचढ़ाई। विदा कियो दृग वारि बहाई ॥
 पुनि खाखीको पूजन करिकै । द्वैशत मुद्रा दिय सुख भरिकै॥

दोहा—बहुत प्रशंसत साधुसो, कन्यहि चलयो लेवाय ॥

बाहेर ग्रामहि जायकै, दिय पालकी धराय ॥१६॥

कन्यासों बोले सुख बोरी । तूतौ भगिनि अहै अब मोरी ॥
 तुव भ्राता मम भक्त सुहायो । तासु परीक्षा हित मैं आयो ॥
 अबतैं भवन जाहि सुखमाहीं । मम प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥
 बोली कन्या वचन सुहाये । तुम सँग मोहिं भ्रात पठवाये ॥
 तुमहिं छाँड़ि जैहौं कहूँ नाहीं । तब बोले प्रभु अति सुख माहीं॥
 युग शत मुद्रा तुम लैलेहू । दिनप्रति संतन भोजन देहू ॥
 कमिहै नहिं यह द्रव्य सुहाई । वचन मानि मम अब घरजाई॥
 सो जकि रही न वचन बखाना । साधु भये तब अंतर्ध्याना ॥
 कन्या बहुरि भ्रात गृह आई । साधु कही सब बात सुनाई ॥
 लालाभक्त परम सुखपायो । संतन टहल माहिं लगवायो ॥
 अंत समय हरिलोक सिधायो । लालाभक्त जगत यश छायो ॥
 शैलाग्राम अबहुँ सुख छाई । भगिनी करत साधु सेवकाई ॥

दोहा—तीनि वर्षभे तनु तजे,तिनकी कथा अनंत ॥

मैं कहँलों वर्णन करौं,कह्यो सुन्यो मुख संत ॥ १७॥

।चत्रकूटम सरयूदासा । मंदाकिनि तट हरिकी आशा ॥
परम रुचिर यक गुफा बनाये । बैठेरहत राम उर ध्याये ॥
इनकी कथा विचित्र अनेका । विस्तर भय कहिदिय मैंएका ॥
एक दिवश तहँ छीतूदासा । गये दरशहित परमहुलासा ॥
दरश परश करि दोउ अनुरागे । सरयूदास हँसन तब लागे ॥
ताकि ताकि आकासहि ओरे । मगन होत आनँद रस बोरे ॥
पूछे कह्यो लखहुँ परकासा । लालाभक्त जात हरि पासा ॥
यह जो महाप्रकाश देखाई । हरि पार्षदन केर सुनु भाई ॥
अचरज मानि भक्तमन भारी । तहँते चले चरण रज धारी ॥
उनइससै बाइस कर साला । मारग कृष्ण पंचमी हाला ॥
यहिदिन कागजपर लिखिराख्यो । पूछे संतन सोउ अस भाख्यो ॥
तांकीभगिनि अहै यहि काला । चरणन परत आय नरपाला ॥

दोहा—सरयूदास प्रभाव इमि, जानहु जन सबकोय ॥

वन प्रमोद अबहुँ लसत,मंदाकिनितट सोय ॥ १८॥

कुंजां नाम साहु गुणरासी । शहर आगरेको है वासी ॥
तापरं परी विपात्ति घनेरी । नाशभयो घरको धन ठेरी ॥
छीतूदास तहाँ पगु धारे । कुंजा पद गहि वचन उचारे ॥
चलिये प्रभु अब ममगृह माहीं । डेरा कीजै अति सुदमाहीं ॥
अस कहि जनकनंदिनी काहीं । कांधे धरि लायो गृह माहीं ॥
भक्तराज लखि प्रेम विशेषी । कृपापात्र रघुवरको लेखी ॥
ताकहँ प्रभु निजसेवक कीन्हा । उभयलोक सुखताकहँ दीन्हा ॥
पुनि बोले प्रभु वचन सुहाये । संतन सेव करहु मन लाये ॥
धनी होहुगे थोरहि काला । लाखन लहिहौ विभव विशाला ॥

जस जस विभव बढत तुवजाई । तस तस संत सेव अधिकार्ये ॥
संतसेव कमती मन धरिहै । तवहीं जनकलली धन हरिहै ॥
जस जस सो भक्तन अनुराग्यो । तस तस तासु बढन धन लाग्यो ॥

दोहा—लाखन धन जब घर भयो, तब झूसीमहँ आय ॥

भक्तराजकें हुकुमते, दीन्ही कुटी बनाय ॥ १९ ॥

तेहि कोठी महँ और न काजा । धरीजात संतन हित साजा ॥
दिनप्रति अमित संत तहँ आवैं । भोजन सादर सबकोउ पावैं ॥
ऐसो कुंजा भक्त सुहायो । जाको सुयश जगतमें छायो ॥
तिलापुरहु यक ग्राम महाना । साधोसिंह तहाँ मतिमाना ॥
संत चरणरज शिरमहँ धारी । सेवन करि किय संत सुखारी ॥
सेवाकीन्हे साधुन केरी । कीरति बढी तासु जग ढेरी ॥
पयहारी लक्ष्मीपरसादा । चित्रकूट महँ अति अहलादा ॥
भंडारा दीन्ह्यो अति भारी । बनी बहुत पूरी तरकारी ॥
घीउ कम्ह्यो तब सेवक धाये । पयहारीको आय सुनाये ॥
तब उठि गये कराही पासा । घिउ लखि बोले सहित हुलासा ॥
करी कराह साज सब पूरा । काढ़हु पूरी परी न झूरा ॥
पूरी कढ़ीं चह्यो जितनोई । घीउ रह्यो जितनो तितनोई ॥

दोहा—संगहिमहँ तिनके रहे, छीतूदास सुजान ॥

तिन अपने नयनन लख्यो, यह सब चरित महान २० ॥

एक साधु भंडारा पारी । भोजन करनलग्यो मुदमारी ॥
तब सब साधुन वचन उचारे । एक संत सब साजु जुठारे ॥
विन यदुपतिके अर्पण कीन्हे । धाय तुरत भोजन करिलीन्हे ॥
छीतूदासहु यह मुखगायो । भो अनर्थ विन भोगहि खायो ॥
पयहारीजी यह सुधि पाई । आये तुरत साधुपहँ धाई ॥
पूजन करि अतिशय सुख मानी । सबन सुनाय कही आसि वानी ॥

जिन प्रभुको नित भोग लगावहिंते प्रत्यक्ष कबहुँ नहिं आवाहि ॥
 साधु रूप अवधेश कुमारा । आये इत करि कृपा अपारा ॥
 प्रकट सवन कहँ रूप देखायो । साजु खैंचि निज करसों पायो ।
 पावहु लै प्रसाद सब भाई । रघुपति शंका दियो विहाई ॥
 असकहिकै बहु द्रव्य चढ़ायो । रुचिर दुशाला एक वोढ़ायो ॥
 दोहा—साधू अंतर्ध्यानभे, भेद न जान्यो कोय ॥

द्रव्य दुशाला जो दियो, परे रहे तहँ सोय ॥ २१ ॥
 पातर कनकन बीनिकै, लीन्हे सब कोउ खाय ॥
 पयहारी चरणन गिरे, आनँद अंबु बहाय ॥ २२ ॥
 तैसहिं तिनके शिष्यभे, सियाराम मतिधाम ॥
 संत सेइ हरिभजन करि, सिद्ध किये मन काम ॥ २३ ॥
 भये भक्तवर चेतनदासा । राठ ग्राम महुँ रह्यो निवासा ॥
 संतन सेव रीति गहिलीन्ह्यो । कृष्ण भजन निशिवासरकीन्ह्यो ॥
 यक दिन साधु अपूरव आयो । कृष्ण भजन बहुविधि तिन गाये ॥
 तब चेतन पूँछ्यो तिय पाहीं । पाक बनावहु संतन काहीं ॥
 नारि कह्यो मेरी नथ लेहू । भोजन साज लाय मोहिं देहू ॥
 तियहि सराहि लाय सब साजू । दिय जेवाय सब साधु समाजू ॥
 पुनि बैठे साधुन ढिग जाई । तिन बहु यदुपति कथा सुनाई ॥
 इत नथ लै वसुदेवकुमारा । चेतनदास रूप कहँ धारा ॥
 लीपत तिय लखि कह मृदुवानी । नथिया पहिरिलेहु सुखदानी ॥
 तिय कह नथ कैसे मुकताये । इनकह यदुपति तार लगाये ॥
 तिय कह गृह लीपहुँ इत आई । तुमहीं नाथ देहु पहिराई ॥
 नारि वचन सुनि प्रभु सुख पाई । दियो नाक नथिया पहिराई ॥

दोहा—चेतन आये सुनि कथा, प्रमुदित अपने भौन ॥

विस्मित है तियसों कह्यो, नथिया लायो कौन ॥ २४ ॥

सोरठा—तुमहिं गये पहिराय, कैसे अब पूंछत अहौ ॥
इन जान्यो यदुराय, आय धाय दरशन दियो ॥२॥

दोहा—चरणदास ऐसहि भये, तिनकी कथा अपार ॥
दिछीजन आनंद दियो, जपतराम सुखसार ॥२५॥
रामदास भे रामप्रिय, तिन्ह शिषि योधादास ॥
विचरत अबहूँ अवनि महँ, किये अवधपति आस २६
विंध्याचलमें होतभे, झामदास सुखरूप ॥
रामरूप झांकी लही, हनुमत कृपा अनूप ॥ २७ ॥
लक्ष्मणदास गया भये, हंसदास इंदौर ॥
वेदान्तीहरिभक्तभे, सुखद नर्मदाठौर ॥ २८ ॥

कंद्रापाली ग्राम अनूपा । राधाश्याम कृष्णवर रूपा ॥
ग्राम जरौली जन सुखदाई । प्रियादास जहँ कुटी बनाई ॥
तिनको चरित श्रवण सुखदाई । सो मैं प्रथमहि दियो सुनाई ॥
केशवदास वास तहँ लीन्ह्यो । निशि दिन भजन कृष्णको कीन्ह्यो ॥
भे हरि वंशदास तिनके शिषि । संत सेवकरिबो लीन्ही सिषि ॥
युगल याम भरि पूजन करहीं । अबै जरौली जन सुख भरहीं ॥
जितने संत कुटी महँ आवैं । ते सुखयुत सब भोजन पावैं ॥
प्रियादास यश विमल मयंका । तामें विचरिं रहे विन शंका ॥
राधाकृष्णचरण रति गाढ़ी । संतन कृपा हृदय तिन्ह बाढ़ी ॥
गंगातीर वदनपुर ग्रामा । रामदासकी कुटी ललामा ॥
तिनके शिषि रामानुज नामा । जिनते संत लहत सुखधामा ॥
संत सेव गुरु रीति चलाई । सोइ करते नहिं नेकु घटाई ॥
मैं शिर धरि संतन रजकाहीं । कइ्यों सुन्यों जो संतन पाहीं ॥

दोहा—संतन यश वर्णन करत, सुधरत सब निज काज ॥

यह भरोस दृढ़ जानिकै, चरण परत रघुराज ॥ २९ ॥

इति सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरघुराज सिंहजूदेवकृतेश्री
रामरसिकावल्ल्यां उत्तरचरित्रे अष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

दोहा—भक्तराजको अब चरित, वरणों विमल विशाल ॥

जाको छीतूदास अस, नाम अहै यहि काल ॥ १ ॥

राजापुर यमुनातट ग्रामा । तहाँ जन्म लीन्ह्यो मतिधामा ॥
बालकालते बुद्धि विशाला । त्यागिदियो जगको जंजाला ॥
राम रंग लाग्यो मनमार्हीं । विचरैं अति निशंक जगमार्हीं ॥
करैं सदा साधुन सत्कारा । विना वृत्ति रघुनाथ अधारा ॥
एक समय बहु साधु जमाती । आय अचानक टेन्यो राती ॥
तुरतहिं तिनके भोजन हेतू । आप गये चलि वणिक निकेतू ॥
मुद्रा लिये पंचशत ताते । साधुन दिये जेवाय मजाते ॥
दिनप्रात साधु तहाँ घर आवैं । भिक्षा करिकैं जेवावैं ॥
पटे वणिकके रुपया नहीं । लैगो धरि बनियाँ तिन्ह काहीं ॥
तब एक साधु अचानक आयो । दै मुद्रा तुरतहीं छड़ायो ॥
कह्यो भक्तजीते तब साहू । मुद्रापटे द्रुतहिं घर जाहू ॥
कह्यो भक्तजीको धनदीन्ह्यो । बनिया कह्यो साधु नहिं चीन्ह्यो ॥

दोहा—साधु आयो एक इत, दियो पाँचसै मोहिं ॥

कह्यो छोड़िये भक्तको, नहिं है है दुखतोहिं ॥ १ ॥

किय विचार तब छीतूदासा । को असहै विन रमानिवासा ॥
तबते है अति दृढ़ विश्वासी । लागे भजन कोशलावासी ॥
एक समय नागा बहु आए । भक्तराज तिनकाहँ टिकाये ॥
सराजाम सब भाँति समेटे । मिली न लकरी एकहु जेटे ॥
लकरी एक ठामा । रही यत्न सों धरी ललामा ॥

नागा कह्यो कहहु लैआवैं । रामदूत हम नाहि डेरावैं ॥
 यदपि भक्त वरज्यो तिन काहीं । लैआये लकरी भय नाहीं ॥
 वरज्यो साहेबके चपरासी । नागा दीन्ह्यो मारि निकासी ॥
 चपरासी साहेब फिरियादे । दौरे पकरनहेतु पयादे ॥
 भक्तहि पकरि गये लै बाँदा । बोल्यो साहेब अति मदमादा ॥
 चपरासी मारचो केहि हेतू । खनिजैहै तुव सकल निकेतू ॥
 | भक्त कह्यो हम कछु नहि जानैं । रघुपति शासन सब थल मानैं ॥

दोहा—तब कुरसीते तुरत उठि, साहेब क्रोध अचेत ॥

मारन धायो भक्तको, लै करमें यक वेत ॥ २ ॥

तेहि क्षण ताहि पटक कोउ दीना । परचोविसंज्ञ भूमि दुख भीना
 बीबी रोवनलगी पुकारी । हाय हाय भो सभा मझारी ॥
 परी भागवत पग तब बीबी । रह्यो न होस सम्हारन नीबी ॥
 भक्त कह्यो साहेब नहि मरिहै । जो प्रतिपाल साधुको करिहै ॥
 साहेब उठ्यो दंड दुइमाहीं । दोउ कर गह्यो भक्त पद काहीं ॥
 पुनि कीन्ह्यो अतिशय सत्कारा । चंदाकरि धन दियो अपारा ॥
 भक्त लौटि राजापुर आये । साधुनके उर आनंद छाये ॥
 वसु दशशत चौरासी साला । धनुषयज्ञ तब कियो विशाला ॥
 तामें अनुभव कियो महाना । मुकुट तेज तिनको दरशाना ॥
 तबते राम रूप नित करहीं । करि झाँकी आनंद उर भरहीं ॥
 एक समय ध्यावत जगदीशा । गमन कियो नगरी जगदीशा ॥
 दर्शन करि मन कियो विचारा । इतते अब न टरहुँ कहूँ टारा ॥

दोहा—और संत सब संगके, चलेगये यह जान ॥

तब स्वप्नेमें भगतको, कह्यो जानकी जान ॥ ३ ॥

तुम करि पुहुमी महँ संचारा । कीजै अधमन केर उधारा ॥
 भक्त कह्यो अब हम नहि जैहैं । जबलग तनु तबलग इतरैहैं ॥

तव शासन दीन्ह्यो जगदीशा।मानि रजाय शपथ मम शीशा ॥
 जो न मानिहै शासन मोरा । तौ पैहै शरीर दुख तोरा ॥
 भक्त कह्यो चाहै दुख होई । नहिं जैहै औरे थल कोई ॥
 तबते दस्त होन बहु लागे । सिंगरे साधु संगके त्यागे ॥
 भक्त सिंधुके तीर विहाला । परेरहे सुमिरत रघुलाला ॥
 छीतूदासहि लियो उठाई । कह्यो वचन यहि भाँति बुझाई ॥
 प्रभुको शासन जो नहिं मानी । ताको उभयलोककी हानी ॥
 प्रभुको शासन शिर धरि जाहू । हरहु जगत् जीवन दुख दाहू ॥
 भक्त कह्यो न शक्ति तनुमाहीं।केहि विधि पुरी छोंड़ि हम जाहीं ॥
 साधु कह्यो जो यहि क्षण जाहू । तो अरोग्य तुरतहि है जाहू ॥
 सुनत साधु मुखकी असि वानी । भक्तराज मति अति हुलसानी ॥

दोहा—भक्त कह्यो जगदीशको, हौं शासन धरि शीश ॥

विचरन करिहौं जगतमे, को दयालु अस ईश ॥ ४ ॥
 इतना कहत रोग भे दूरी । भई शरीर शक्ति भरिपूरी ॥
 भक्त नाय जगदीशहि शीशा । सुमिरत चले अवध अवनीशा ॥
 जब साखीगोपाल पहुँ आये । संगके साधु समिटि सुखछाये ॥
 तहँते चले पंथ वन घोरा । मिले न भोजन हैगो भोरा ॥
 चलि नहिं सकैं साधु मगमाहीं । क्षुधा विवश पग पग मुरझाहीं ॥
 तब एक साधु अपूरव आयो । बहुरी भोजन सबहिं करायो ॥
 भक्तराज पुनि पथ गहिलीन्हे । मिले संत पूरव तजिदीन्हे ॥
 तिनते सहित दूरि कछु आये । महाविपिन भोजन नहिं पाये ॥
 करत भजन तहँ बसेनिशा में । आयो एक साधु डेरा में ॥
 सो कह मोहिं लूटै पथ चोरा । साधुन हाथ वचव अब मोरा ॥
 भक्त तासु धन यत्न करायो । साधुन आसन तर धरवायो ॥
 पुनि साधुहि निज निकट लुकाई । डाँकू आय कह्यो गोहराई ॥

दोहा—डोरा काको साहु कहँ, दीजै वेगि बताय ॥

भक्त कह्यो इत साधुहै, साहु न परै जनाय ॥ ५ ॥

चलेगये सिंगरे तब चोरा । साहु जानि जिय दान निहोरा ॥
बहुत द्रव्य तब दियो चढ़ाई । मिटिगै सकल स्खर्च दुचिताई ॥
कछुक दूरि चलितेइ ठिग धाई । मारचो और साहु यक जाई ॥
लूटिगई ताकी सब साजू । तस्कर गमने सहित समाजू ॥
भक्त कृपाते यह बचिगयऊ । संत संग पुनि मारग लयऊ ॥
सरित एक अति महा भयावनि । निरखत महाभीति उपजावनि ॥
भक्तराज पहुँचे तहँ भारी । छायगई निशिकी अँधियारी ॥
सावन मास मेघ झुकिआये । सरित देखि सब भान भुलाये ॥
तब यक फरसा गहे हाथमें । आयगयो मनु रह्यो साथमें ॥
तासों भक्त कही असि वाता । सरित उतारिदेहु तुम भ्राता ॥
मुद्रा युग करार ह्वैगयऊ । सरित उतारि तुरत तेहि दयऊ ॥
आप गयो जब चलि कछु दूरी । भक्त लख्यो सरिता जलपूरी ॥

दोहा—घोर धार चलती प्रबल, लखि न परत कहँ वाट ॥

साहुहु मन विस्मित भयो, लायो यहकेहि वाट ॥ ६ ॥

भक्त उठाय कह्यो यक वाहू । मुद्रा लये विना कस जाहू ॥
सो कह आगे द्वीप लखाई । तहँ यक चट्टी परमसुहाई ॥
अस कहि सो तहँ ते द्रुत धायो । भक्तराज तेहि खोज न पायो ॥
तब सब मनमें कियो विचारा । रक्षणकिय रघुवंशकुमारा ॥
वसिनिशि तहँपुनि चले प्रभाता । सहित साहु पुलकित अति गाता
आनँद सहित गया कहँ आये । तहाँ साहु सब साजु मँगाये ॥
खान पान सन्मान सुधारचो । संतनकर कलेश निवारचो ॥
यहि विधि करत चरित्र अनेका । गयाश्राद्ध करि सहित विवेका ॥
आये राजापुर कहँ जवहीं । अतिशय मुदित भये सब तवहीं ॥

रामभक्त सुनि मम पितुकाहीं । आये प्रभु रीवांपुर माहीं ॥
मम पितु कियो बहुत सत्कारा । उभयओर सुख भयो अपारा ॥
तबते भक्तराज प्रतिसाला । आवत मारग भास उताला ॥

दोहा—और चरित वर्णनकरौं, भक्तराजको तौन

गोविंदगढ़में मैं लख्यौं, अति अचरजमय जौन ॥ ७ ॥
मेरे शहर निकट सर भारी । जलविहार हित करी तयारी ॥
सिय रघुनंदन रूप सुहावन । भक्तराज राजत अतिपावन ॥
मधुर अली सँग संत सुहाये । मांगि तरणिमें सबनि चढ़ाये ॥
मैंहूँ चढ़ि अति आनंद पायो । जलविहार हित तरणि चलायो ॥
सरवर मधि नौका जब आयो । तब तामें बहु जल भरि आयो ॥
बूढ़त सरमहँ नाव निहारी । संकट भयो सबनको भारी ॥
तब मैं विनय कियो करजोरी । नाथ हाथ अबहै पति मोरी ॥
भक्तराज कह जल भय नाहीं । कछु न सोच कीजै मनमाहीं ॥
राम लषण सिय करहु उचारा । पार करहिंगे पवनकुमारा ॥
जब सब राम नाम मुख गायो । नौका तुरत तीरमहँ आयो ॥
भक्तराज सबको उतराये । पाछे आप उतरि जब आये ॥
तब नौका बूढ़्यो जल माहीं । सब जन चकृत भे तेहि ठाहीं ॥

दोहा—यह सब निज नयनन लख्यौं, भक्तराज परभाव ॥

बार बार करि दंडवत, मान्यौं परम उराव ॥ ८ ॥

रामभक्त सज्जन सुखद, सूपकार मम प्यार ॥

मोहनजी गोविंदगढ़, निवसत परमउदार ॥ ९ ॥

दिय निदेश तेहि भक्तजी, संत महल बनवाव ॥

बसैं संत जन आय तहँ, हमहूँ रहब सचाव ॥ १० ॥

संत महल बनवाय दिय, मोहन आयसु पाय ॥

तहां संत निवसंतहैं, बसत भक्तजी आय ॥ ११ ॥

मधुर अलीहू वसत तहँ, राम लषण सिंय संग ॥

देत जनन दरशाय शुचि, परमानंद उमंग ॥ १२ ॥

जवहीं ते अति करि कृपा, वसे भक्त तेहि धाम ॥

तवहींते रघुराज किय, मोहन पूरण काम ॥ १३ ॥

एक समयकी कहतहौं, कथा भक्तवर केरि ॥

रामभक्त कायस्थ यक, दौलति नाम निवेरि ॥ १४ ॥

गयो दरशहित सो यक काला।दौलतिको लखि बुद्धि विशाला॥

भक्तराज कह तुम कछु बांचो । सब संतनको चित हित रांचो॥

दौलति कह्यो भक्तकर माला । मैं बांचौं हेदीनदयाला ॥

भक्तराज संमत करिदीना । दौलति बांचन लग्यो प्रवीना ॥

बांचत वीति गयो कछुकाला । घरते आयो लिख्यो हवाला ॥

संन्यपात तुव सुतको भयऊ । अवतौ मरण योग्य है गयऊ ॥

भक्तराजके ढिग तव जाई । दौलतिगो वृत्तान्त सुनाई ॥

भक्तराज कह तुम हरिदासा । हरिदासन कहँ देहु हुलासा ॥

तुम्हरे भवन विघ्न नहिं होई । रामदास छुइ सकै न कोई ॥

मम विभूति दीजै सुतकाहीं । आवहु तुरतै बहुरि इहांहीं ॥

दौलतिलै विभूति घर आये । नेसुकहीं सुतके मुख नाये ॥

परत विभूति पूत उठि बैठ्यो । मानहुँ सुधा सिंधु महँ पैठ्यो ॥

दोहा—दौलति आयो बहुरिकै, भक्तराजके पास ॥

बार बार पदवंदिकै, पायो परमहुलास ॥ १५ ॥

जबते भक्तराज किय दाया । तबते दौलति शुभ मति पाया॥

यही रामरसिकावलिकेरी । किय सहाय खरा लिखि ठेरी ॥

मन्यो एकको सुत यक काला । घरके सब हैगये विहाला ॥

तेहि लावन लै गये मशाना । उपज्यो तासु पिताके ज्ञाना ॥

भक्तराजकी सुधि जब आई । तब बालकको लियो उठाई ॥

॥ भक्तराज सन्मुख धरि दीन्ह्यो । जुरि कुटुंब विनती बहु कीन्ह्यो ॥
 तब भक्तहि अति संकट गयऊ । संकट मोचन सुमिरण कयऊ ॥
 सुमिरि पवनसुत दियो विभूती । उख्यो बाल गै यम करतूती ॥
 एक समय संतनके संगी । रंगे राम रस रासहि रंगा ॥
 बीडा ग्राम एक मम देसा । मोर बंधु कुल जानहु वेसा ॥
 तहँ बघेल यक रह अधधामा । रामसिंह ताको अस नामा ॥
 पूर्व पुण्य किय तासु प्रकासा । भक्तराज किय आगम वासा ॥
 दोहा—यथा कथं चित सो कियो, भक्तराज सत्कार ॥

एक मास भर होतभो, संतन भजन विहार ॥ १६ ॥
 भक्तराज लखि ताकहँ दीना । तापर कछुक अनुग्रह कीना ॥
 हनुमत पूजन मंत्र बतायो । राम नाम उपदेश सुनायो ॥
 सकल संत सेवनकी रीती । दियो बताय कराय प्रतीती ॥
 तबते रामसिंह बघेला । भयो रामको भक्त नवेला ॥
 याम युगल लगि भरि अनुरागा । बैठि भजन करने सो लागा ॥
 यद्यपि तापर विपति घनेरी । तदापि न भजन तजै सुख हेरी ॥
 कायथ एक रह्यो तेहि ग्रामा । आयो भक्तराजके धामा ॥
 भक्तराज नेउता लिय मानी । कायथ गयो सदन धनि जानी ॥
 भै विसूचिका निशि तेहि नारी । घरके रोवन लगे पुकारी ॥
 कायथ दौरि भक्त पहुँ आयो । घर वृत्तान्त कहन नहिँ पायो ॥
 रामरूप दीन्ह्यो तेहि बीरा । भक्तराज पूँछ्यो तब परिा ॥

दोहा—तब कायथ वृत्तांत सब, घरकोदियो सुनाय ॥

भक्तराज बोले वचन, नेसुकही मुसकाय ॥ १७ ॥
 अब शंका कीजै कछु नहिँ । रघुपति कृपा विपति मिटिजाहीं ॥
 कायथ लौटिगयो निज अयना । लख्यो नारि रुजविन निज नयना ।
 मान्यो भक्तराज परभाऊ । कियो निमंत्रण सहित उराऊ ॥

यहि विधि भक्तराज प्रभुताई । कहँलों कहौं महासुददाई ॥
 एक समय वृंदावन काहीं । गमने भक्तराज सुखमाहीं ॥
 तहँ अस सुन्यो निशा जब होई । सेवा कुंज रहै नाहिं कोई ॥
 सांझहिं सेवा कुंज पधारे । सबके कहे टरे नाहिं टारे ॥
 बीति गई जब आधीराता । आयो एक संत अवदाता ॥
 कह्यो चलहु इतते नाहिं रहियो । हरिसों हठ कवहुं नाहिं गहियो ॥
 भक्त कह्यो कैसहुनाहिं जैहौं । आजु राति इतहीं वसिरैहौं ॥
 साधु भयो तब अंतर्ध्याना । रहे भक्त तेहि निशि स्थाना ॥
 भोर भयो जब नयन उवारे । निरखे परे कुंजके द्वारे ॥

दोहा—भक्तराज मनमें कियो,ऐसो ठीक विचार ॥

इतै रहनको हुकुम नाहिं,संध्या लागि भिनुसार ॥१८॥

शहर आगरे कहँ सुखदाई । भक्त चले सुमिरत रघुराई ॥
 परचो अकालदेशतेहि माहीं । पाति तिय तिय सुत बेंचि पराहीं ॥
 भक्तराज यह दशा निहारी । मनमें सोच कियो तहँ भारी ॥
 धनुषयज्ञको नेमाहिं जोई । सो अब पूर कौन विधि होई ॥
 यतनो मनमें करत विचारा । भे सहाय तब पवनकुमारा ॥
 एक धनी शिर व्यथा घनेरी । सो कह हरहु पीर, जो मेरी ॥
 द्वैशत मुद्रा तुरत चढ़ाऊं । देखि रामलीला सुख पाऊं ॥
 भक्त विभूति दियो सुख छाकी । शिरकी व्यथा गई सब ताकी ॥
 द्वैशत मुद्रा साहु चढ़ायो । वारंवार चरण शिरनायो ॥
 भक्तराज सब साजु हँकारी । धनुषयज्ञ की करी तयारी ॥
 उत्सव देखि सकल अनुरागे । निज निज भाग्य सराहन लागे ॥
 तहां सेठ यक लक्ष्मीनाथा । धरचो भक्त चरणनमहँ माथा ॥
 तुरत पंचशत मुद्रा लाई । भक्तराज कहँ दियो चढ़ाई ॥

दोहा—पुनि रघुनंदन चरणमें, शिर धरि अति सुख पाय ॥

भेंटकियो मुद्रा सहस, संतन शीशनवाय ॥ १९ ॥

सो उत्सव लखि परम रसाला । जय ध्वनि छायरही तेहि काला ॥
भक्तराज संतन बोलवाई । सो धन दीन्ह्यो तहैं लुटाई ॥
सहस एक ऋण भयो तहांहीं । चले मुदित शंका कछु नाहीं ॥
अमरैया यक ग्राम महाना । तहैंको भूप महा मतिमाना ॥
तासुत कहैं देवी कढ़ि आई । जियन आश सब दियो विहाई ॥
भक्तराजकी सुधि तब आई । चरणवांदि निज विपति सुनाई ॥
दैं विभूतिनृपसुतहि जियायो । भजन प्रभाव देश दरशायो ॥
द्वै सहस्र नृप द्रव्य चढ़ायो । करि पूजन चरणन शिरनायो ॥
शहर कालपी महैं पुनि आये । तहैंके वासी अति सुख पाये ॥
तहाँ अजार परचो अति भारी । शोकितभे तहैंके नर नारी ॥
एक साहुकी नारि तहांहीं । विह्वल भई रोगवश माहीं ॥
मरण काल ताको लखि साहु । पकरचो भक्त चरण दोउ बाहु ॥

दोहा—भक्तराज करिकै कृपा, दियो पुनीत विभूति ॥

मुख डारत मिटिगै सबै, काल कर्म करतूति ॥ २० ॥

निरुज नारि लखि तेहि सुख पायो । धन दैं बार बार शिरनायो ॥
पुनि यक उच्च निसान गढ़ायो । महावीरको कहि गोहरायो ॥
यहि तरते कढ़िहै जो आई । ताको मारी नाहिं सताई ॥
तहैं कालपी जनन कहैं भूरी । भयो निसान सजीवनमूरी ॥
मारी भय काहुहि नाहिं व्यापी । जेहि व्यापी ते भे न सतापी ॥
अबलों गड़ो निसान तहांहीं । सूचन करत भक्त यश काहीं ॥
रहै साहु यक तेहि पुरमाहीं । प्रेत एक पीढ़ै तेहि काहीं ॥
एको क्षण न साहु कल पावै । जिंद कोपि तेहि अवनि गिरावै ॥
पुरुष साहु वधन तेहि कीन्ह्यो । ताको द्रव्य सबै लै लीन्ह्यो ॥

भयो जिंद सो परम कराला । गुणिन पछारत अवनि उताला ॥
भक्तराजकी सुनत अवाई । साहु विपति अपनी सब गाई ॥
भक्तराज दाया उर धारी । भीति साहुकी दियो निवारी ॥

दोहा—चरणामृत दिय प्रेत को, सो विकुंठ गो धाय ॥

तेहि देशहि में अति विमल, रह्यो भक्त यश छाये ॥ २१ ॥

यक दिन साधू एक वर, जगत् रीति हिय भेटि ॥

आये राजापुर हरषि, भई भक्तसों भेटि ॥ २२ ॥

भयो समागम तिन कह्यो, लीजै द्रव्य महान ॥

भक्त कह्यो नहिं लेउँगो, राम करहिं कल्याण ॥ २३ ॥

तब साधू बोले वचन, मँगिहौ द्वारहि द्वार ॥

संतसेव परभावते, ह्वै सुयश अपार ॥ २४ ॥

आजुहिंते षटमास भरि, यहि कालिंदी माहिं ॥

कटिहै जलते अमित धन, झूठ मोर प्रण नाहिं ॥ २५ ॥

यमुनामें बहु धन कढ़्यो, जानत सकल जहान ॥

भक्तराज भिक्षा गही, साधू वचन प्रमान ॥ २६ ॥

भक्तराजके प्रिय अधिकारी । तीनि भक्त भे जग भयहारी ॥

लक्ष्मणदास अयोध्यादासा । आशाराम रामकी आसा ॥

छीतूदास कृपावल पाई । निज महिमा जग प्रगट देखाई ॥

राजापुरको रह्यो भँडारी । नाम अयोध्या जन सुखकारी ॥

सब संतन कहँ भोजन देहीं । मानुष जन्म लाभ नित लेहीं ॥

यक दिन भक्तराज कह भाई । पूरी साजु देहु सुखदाई ॥

जेहि साधुन कलेश नहिं होई । अग्नि तापते तपै न कोई ॥

यह सुनिं तुरत अयोध्यादासू । संकटमोचन सुमिरेउ आसू ॥

सीधापूरी तिन नहिं कीन्हे । संतन अशन मिठाई दीन्हे ॥

सहसन संत तहां चलि आवैं । भोजन सबै मिठाई पावैं ॥

वर्ष अठारह भरि यहि भाँती । दियो मिठाई जनन जमाती ॥
 हनुमत कृपा कमी कछु साजन । भई कुटी द्रौपदिकर भाजन ॥
 दोहा—संतसेव परभाव अरु, भक्त अनुग्रह पाय ॥

रामधामको जातभो, चढ़ि विमान सुखपाय ॥ २७ ॥
 लक्ष्मणदास परम विज्ञानी । कथा सुनहु तिनकी सुखदानी ॥
 सेवत सेवत संत सुजाना । बाढ़्यो प्रेम दरश भगवाना ॥
 स्वप्न माहँ हरिरूप देखायो । मंद मंद अस वचन सुनायो ॥
 मेरे निकट रहहु अब प्यारे । मेटहु जगके सकल खँभारे ॥
 इन कह भक्तराज लखि आऊँ । बिना लखे प्रभु सुख नहिँ पाऊँ ॥
 छीतूदास पास महँ आयो । स्वप्न केर वृत्तांत सुनायो ॥
 पुनि पद बंदि रजायसु पाई । चित्रकूट पहुँच्यो सुख छाई ॥
 बैठि माधुरी कुंज विशाला । सोहत उर तुलसीकर माला ॥
 संत सभामधि आसन कीन्ह्यो । रामधामको पंथहि लीन्ह्यो ॥
 तासु लासको खोज न पायो । सहित शरीर राम अपनायो ॥
 रहे भक्त जे आशारामा । तिनको चरित कहौं सुखधामा ॥
 भक्तराजको शासन पाई । मिथिलापुरको चले तुराई ॥
 रामरूप झांकी तेउ करहीं । देखि देखि आनँद नित भरहीं ॥

दोहा—मिथिलापुर पहुँचे जबहिं, तब आति आनँदपाय ॥

संतसभा अनुपम भई, सो सुखवरणि न जाय ॥ २८ ॥

यक दिन रघुवर रूप प्रभु, चढ़ि घोड़ा अतुराय ॥

चले तहां वनते तुरत, वाघ आयगो धाय ॥ २९ ॥

उतारि अश्वते हनतभे, एक दंड शिर तासु ॥

दंड घात शिर लगतहीं, प्राण छूटिगे आसु ॥ ३० ॥

जनकसुताके दरशभे, तहँ यक कुंड बनाय ॥

सीताकुंडहि नाम तेहि, न्हात कुष्ट सब जाय ॥ ३१ ॥

सुनहु एक सुंदर इतिहासा । जो यहि देशहि कियो प्रकाशा ॥
 मैं एक शहर नवीन बसायों । तेहि गोविंदगढ़ नाम धरायों ॥
 तहँ एक समय भक्त पगुधारा । मोपर करिकै कृपा अपारा ॥
 मोहिं निदेशहि दियो बोलाई । धनुषयज्ञकीजै सुखदाई ॥
 मैं कह धनुषयज्ञ कर काजा । होत बिना नहिं साधु समाजा ॥
 तब प्रभु कह्यो संत सब ऐहैं । सब विधि पूरण रामकरैहैं ॥
 तब मैं प्रभु शासन धरि शीशा । विरच्यों धनुषयज्ञ सब दीशा ॥
 देश देशकी संत समाजा । आई सकल मानि कृतकाजा ॥
 जुरे सहस्रन द्विज अरु संता । अन्न रह्यो नहिं पूर करंता ॥
 मैं विनती कीन्ह्यो तब जाई । संत बहुत लघु अन्न देखाई ॥
 पूर अन्न करिदेहु कृपाला । कह्यो नाथ तब वचन विशाला ॥
 करिहै पूर कोशलाधीशा । संतन देहु नायपद शीशा ॥

दोहा—लग्यों देन मैं अन्न तब, विप्रन साधु समाज ॥

भक्त अनुग्रह विभव बश, कमी न एको साज ॥३२॥

अन्न बसन धन विविध देखाने । विप्रहु साधु समाज अघाने ॥
 तबते धनुषयज्ञ उत्साहू । होत वर्ष प्रति रामविवाहू ॥
 और कहाँ कहाँ इतिहासा । भक्तराज यश जगत प्रकाशा ॥
 मैं कहिकै पाऊं किमि पारा । भक्तराज यश पारावारा ॥
 मोहिं जानि सेवक निज दीना । मोशिर चरण कमल धरिदीना ॥
 मोरे और न कछु अधारा । वंदौ पद रज बारहिवारा ॥
 जौन काल महँ तुलसीदासा । रामतत्त्व कीन्ह्यो परकासा ॥
 तौने कालहि रहे गोसाँई । रह्यो न दूसर तिनकी नाँई ॥
 तैसहि अबहुँ गुणहु यहि काला । भक्त सरिस नहिं भक्त विशाला ॥
 जो भ्रम मानहु लिखी हमारी । जाय भक्त ढिग लेहु निहारी ॥

चहो जो रघुपति चरण सनेहू । भक्तराज पद महँ मन देहू ॥
 विन हरि भक्तन सेवन भाई । मिलत राम नहिं राम दोहाई ॥
 दोहा—पारावार अपार यह, अति कराल संसार ॥

भजहु रामभक्तन चरण, चहहु जान जो पार ॥ ३३ ॥
 मैं यह अतिशय कियो ठिठाई । रघुवर रसिकावली बनाई ॥
 पुनि पुनि कहौं कविन जन पाहीं । दीजै दोष कछु मन नाहीं ॥
 रच्यो रामरसिकावलि जो मैं । कियो संत सेवन यह सो मैं ॥
 हरिभक्तनको चरित सुहावन । कहत सुनत कलि कलुष नशावन ॥
 जो कछु सुन्यो कह्यो अनुरागे । वांचेहु बूझेहु जन बड़भागे ॥
 श्रोता सुनहु वात यक मोरी । भक्तावली जौनि मैं जोरी ॥
 तामें किहेहु न मोरि ठिठाई । जानहु सकल संत प्रभुताई ॥
 होहु प्रसन्न जो सुनि यह ग्रंथा । तौ करि कृपा बतावहु पंथा ॥
 जौनिभांति श्रीयदुकुलराई । मोहिं लेहिं जेहि विधि अपनाई ॥
 मोहिं यक संतन चरण भरोसू । सजन गनहिं न दुर्जन दोसू ॥
 हरिविमुखिन हरिसन्मुखकरहीं । सुमति देहिं दुर्मति हठि हरहीं ॥
 जय जय संतन चरण सरोजू । जौन विश्वास दासकर रोजू ॥

दोहा—उनइससै यक विंशती, संवत आश्विन मास ॥

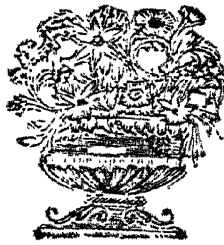
शुक्र सप्तमी वार गुरु, कीन्ह्यो विमल प्रकाश ॥ ३४ ॥

इति सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीरामर-
 सिकावल्यां उत्तरचरित्रे एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

कवित्त घनाक्षरी—मंगल सदाही करें राम है प्रसन्न सदा रा-
 मरसिकावली या ग्रंथ बनवैया को ॥ मंगल सदाही करें राम है
 प्रसन्न सदा रामरसिकावली या ग्रंथ छपवैया को ॥ मंगल सदा-
 ही करें राम है प्रसन्न सदा रामरसिकावली सुनैया सुनवैया को ॥

मंगलसदाही करें राम युगलेश कहैं रामरसिकावली शोधैया औ
वोधैया को ॥ १ ॥

दोहा—नाम रामरसिकावली, भक्तमाल अभिराम ॥
रामरसिक जन सर्वदा, करैं कंठ वसुधाम ॥ ३५ ॥
महाराज रघुराजहैं, ग्रंथकार सरनाम ॥
तिनको मंगल सर्वदा, करहिं जानकीराम ॥ ३६ ॥
लिखनहार अब ग्रंथको, युगलदास विख्यात ॥
आगे लिखत कवीर जो, लिख्यो भविष अवदात ३७॥
इति उत्तर चरित्र समाप्तं शुभमस्तु ॥



श्रीगणे शायनमः ॥ श्रीमतेरामानुजायनमः ॥

श्रीहारिगुरुचरण कमलेभ्योनमः ॥

अथ सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचंद्र

रूपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसि

कावल्यांग्रंथान्तर्गत श्रीयुगलदासकृत व

घेलवंशवर्णनं नाम आगम निर्देश

ग्रंथप्रारम्भः ॥

दोहा—वंदौ वाणी वीण कर, विधिरानी विख्यात ॥

वरदानी ज्ञानी सुयश, हरि गानी दिन रात ॥ १ ॥

मदन कदन सुत मुद सदन, वारण वदन गणेश ॥

वंदतहौं अरविंद पद, प्रद उर बुद्धि विशेष ॥ २ ॥

सवैया—श्रीरघुनंदन श्रीयदुनंदन औध द्वारकाधीसविलासी

रावणकंस विध्वंश किये जिन अंश भये अवतारप्रकाशी

पारकयाभवसिंधु अपारको वोहितनामजासंतसुपासी।

वंदत हौं तिनके पद द्वंद्व सुमें अरविंद अनंदकेरासी॥

दोहा—शंकर शंकर पद कमल, वंदन करौं निशंक ॥

शिर मयंक शुचि वंक जेहिं, लसति शैलजा अंक॥३॥

प्रियादास पद पद्म युग, पुनि पुनि करहुँ प्रणाम ॥

विश्वनाथ नरनाथ गुरु, हरि स्वरूप सुखधाम ॥ ४ ॥

सांच मुकुंद स्वरूपजे, नाम मुकुंदाचार्य ॥

वंदौ नृप रघुराज गुरु, करन सिद्धि सब कार्य ॥५॥

रामभक्त शिरताज जे, महाराज विश्वनाथ ॥

करन अनाथ सनाथ पद, पुनि पुनि नाऊं माथ॥६॥

सवैया—भूपशिरोमणि श्रीविश्वनाथ तनैरघुराज अनाथनिनाथै
श्रीयदुनाथको भक्त अनूपमसेवी सदाद्विजसाधुनगाथै ॥
तेज तपै दिननाथसों जासु यशो निशि नाथ दिपै महिमाथै
तापद पाथजमें सुख साथ है जोरि कै हाथनवावतमाथै ॥

दोहा—पवनपूत जय दुखदवन, राम दूत सुखधाम ॥

शमन धूत सुकृपाभवन, बल अकूत सब ठाम ॥ ७ ॥

जय कबीर मतिधीर अति, रति जेहि पद रघुवीर ॥

क्षीर नीर सत असत कर, विवरण हंस शरीर ॥ ८ ॥

जय हरि गुरु हरि दास पद, पंकज मोहि भरोस ॥

जाकी कृपा कटाक्षते, मिटत सकल अफसोस ॥ ९ ॥

संतत संतन भूसुरण, चरण कमल शिरनाय ॥

बार बार विनती करौं, सब मिलि करो सहाय ॥ १० ॥

रच्यो रामरसिकावली, ग्रंथ भूप रघुराज ॥

तामें बहु भक्तन कथा, वरण्यो भरि सुखसाज ॥ ११ ॥

भक्तमाल नाभा जुकृत, ताहीके अनुसार ॥

श्रीकवीरहू की कथा, तामें रची उदार ॥ १२ ॥

छप्पय—जो कबीर बांधव नरेश वंशावली भाखी ॥

अरु आगमनिर्देश भविष्यहु जो रचि राखी ॥

सोउ समास सहुलास तासुमें वर्णन कीनो ॥

सुनत गुणत जेहि सुकवि संत संतत सुख भीनो ॥

तेहि तुम वरणौ विस्तार युत, शासन नृप रघुराज दिया ॥

कह युगलदास धरि शीश सो, वर्णन हों आरंभकिय ॥

वनाक्षरी—प्रथम कबीरजी सिधारि पुरी मथुरामें संतन सहि-
त अति हरष वढ़ाय कै ॥ तहां धर्मदास आय प्रभु पदपंकजमें
बैठो बार बार शीश सादर नवायकै ॥ ज्ञान उपदेश ताको की-

छंद—द्वापर अंत आदि कलियुगमें कृष्ण प्रकाश अनूपा ॥
 पूरुव दिशि सागरके तटमें धरिहै बोध स्वरूपा ॥
 तहां जाय तुम प्रगट होउ यह रघुवर आयसु पाई ॥
 प्रगटि बौडैसा जगपतिकेरो दर्शन लीन्ह्यो जाई ॥ १ ॥
 सागर तीर गाड़ि कुवरी पुनि बाँधि तासु मर्यादा ॥
 पुनि परबोधि सिंधुको बहु विधि गमन्यों युत अह्वादा।
 चलत चलत गुजरात आयकै नगर विलोक्यो जाई ॥
 जहां सुलंक भूप बहु साधुन राखे रहो टिकाई ॥ २ ॥
 भक्तिवान अति रही रानि अति नित सब साधुन केरो ॥
 दर्शन करिलै तिन चरणामृत निज घर करै वसेरो ॥
 ते साधुनको दर्शन करिकै एक वृक्षतर जाई ॥
 वसि आसन विछायकै बैठयो हरिको ध्यान लगाई ॥
 एक दिन रानी सब साधुनको भोजन हित बोलवाई।
 पंगति दिय बैठाय गयो मैं नहि तहँवां हरषाई ॥
 रानी तब मेरे आश्रममें आवतभै अतुराई ॥
 महि तजि अंतरिक्ष आसन मम निरखि परम सुख पाई ॥
 विनती किय प्रभु आपहु चलि कै मम घर भोजन कीजै ॥
 मैं तब कह नहि भूख प्यास मोहिं हरि अधार गुणि लीजै।
 रानी कह यकतो सुत विनमैं दुखित राज्य सब सूनी ॥
 दूजे जो न आप पगुधारे तपी ताप तो दूनी ॥ ५ ॥
 मैं कह सोच करै नहिं राजा द्वै सुत ह्वै तेरे ॥
 संतनको चरणामृत अबहीं लैआवे ढिग मेरे ॥
 साधुन चरण धोय चरणोदक लैआई जब रानी ॥
 दियो पियाय रानिको तब मैं निज चरणोदक सानी ॥
 लहि मेरो वर साधुनकेरो बहु विधि करि सत्कारा ॥

न्ह्यो श्रीकबीर तहां कह्यो सो न इतै भीति विस्तर बुझायकै ॥
मानिकै यथारथ कृतारथ है धर्मदास चलि मथुरा ते पथ गौन्यो
चित चायकै ॥ १ ॥

दोहा—धर्मदास आवत भये, बांधौगढ़ सहलास ॥

गुरु विश्वास दृढ़ वास किय, जासु हिये आवास ॥ १३ ॥
पुनि कछु दिन बीते सुख छाये । श्रीकबीर बांधव गढ़ आये ॥
तहँ चौहट बजार मधिमाहीं । निरखि एक सेमर तरु काहीं ॥
तहाँ आठ दिन आसन कीन्ह्यो । सेमर तरु उड़ाय पुनि दीन्ह्यो ॥
निरखि लोग सब अचरज माने । भूपति सों सब जाय बखाने ॥
महाराज साधू एक आई । सेमरतरुको दियो उड़ाई ॥
गुणि अचरज भूपति अतुराई । प्रभु पद किय दंडवत सिधाई ॥
सादर नृप कर जोरि सुहाये । पूँछ्यो नाथ कहाँसे आये ॥
तब प्रभु वचन कह्यो अभिरामा । हम कबीर निवसे यहि ठामा ॥

दोहा—तब राजा पूँछत भयो, कैसे जानैं नाथ ॥

देहु परीक्षा हमहिं जो, तौ लखि होय सनाथ ॥ १४ ॥
होत अज्ञान नाश जेहिं तेरे । कहिय नाथ सो ज्ञान निबेरे ॥
देवी आदि वेदकी जोई । आदि निरंकारहु जो होई ॥
सादर पूँछत भयो भुआला । दियो बताय कबीरकृपाला ॥
राजाराम कह्यो पुनि वैना । कहिय जो आदि बघेल सचैना ॥
तब तुमको कबीर हम जानैं । अपनो जन्म सफल करि मानैं ॥
सुनि कबीर तब मृदु मुसक्याई । उत्पति जौन बघेल सोहाई ॥
लागे कैहन भूपसों सो सब । हम साकेत रहे निवसे जब ॥
तब मोसों कह श्रीरघुराई । तुम कबीर संसारहि जाई ॥

दोहा—जीवनको उपदेश करि, मेरो ज्ञान अशोक ॥

हमरे लोकपठावहू, जो प्रद आनंद थोक ॥ १५ ॥

परम प्रमोद पायउर रानी गमनत भई अगारा ॥
 कह्यो हवाल भूपसों सो सब सुनि नृप अति सुखपाई ।
 लै फल फूल द्रव्य बहु सादर मम समीप द्रुत आई ॥
 करि दंडवत प्रणाम विनय किय नाथ दया उर धारी ।
 कछु दिन आप वास इत कीजै तौ मैं होहुँ सुखारी ॥
 कुटी दियो बनवाय भूप तहँ करतभयो मैं वासा ॥
 कछु वासरमें गर्भवतीमै रानी सहित हुलासा ॥ ८ ॥

दोहा—ज्यों ज्यों रानीके उदर, बढ़यो गर्भ करि वास ॥

त्यों त्यों रानीके वपुष, बाढ़यो परम प्रकाश ॥ ९ ॥
 कछु दिन विते सुदिन जब आयो । तब रानी दुइ सुत उपजायो ॥
 भयो जो जेठ पुत्र तेहि आनन । होत भयो सम मुख पंचानन ॥
 लहरो तनय होत जो भयऊ । तेहि नर तनु अति सुंदर ठयऊ ॥
 लखि रानी अति अचरज मानी । दिय देखाय भूपतिकहँ आनी ॥
 मानि शंक भूपालउदासा । कह कवीर आयो मम पासा ॥
 सादर करि दंडवत प्रणाम । कीन्हि विनय भूप मतिधामा ॥
 नाथ भये मेरे सुत दोई । है अति कृपा आपकी सोई ॥
 पै जो भयो जेठ सुत स्वामी । व्याघ्र वदन सो यह बढनामी ॥

दोहा—सो सुनि मैं वाणी कही, करिकै बहुत प्रशंस ॥

यह सुत वंश वतंशभो, रामलोकको हंस ॥ १० ॥
 व्याघ्र वदन परतो दृग जोई । नाम बघेल ख्याति जग होई ॥
 याते वंश बयालिस ताई । अटल राज्य रहिहै महि ठाई ॥
 तेजवान यह होय महाना । पूरण भक्तिवान भगवाना ॥
 वंश बयालिसलों अभिरामा । चलिहै तुव बघेल कुल नामा ॥
 यह वर लहि सो मेरे मुखते । भूपति आय महल अति सुखते ॥
 ॥ द्विजन दान दै तोपन काहीं । दगवायो बहु बार तहांहीं ॥

पुनि मोकहँसो नृपति सुजाना।करि बहु विनय लाय निजथाना॥
ऊँचे आसन पर बैठाई । पूजन किय अति आनँद छाई ॥
दोहा—रानीलै दोउ पुत्रको, मेरे पग दिय डारि ॥

तब मैं पुनि देतो भयों, बहु अशीश चित धारि१८॥
बढिहै तोरि राज्य नरनाहं । हैहै वांधवगढ़को शाहा ॥
लहि वरदान भूपयुत रानी । निवस्यो महल मोद अतिमानी ॥
मेरे कहे फेरि सो भुआरा । पूज्यो हरि षोडश उपचारा ॥
तब पुत्रनयुत नृप रानी कहँ।शिष्य कियो मैं अति आनँद मँहँ॥
करि आरती फेरि परसादा । दीन्ह्यो सबको युत अह्लादा ॥
बहु बिधि करी प्रशंसा राजामैं कह भो सिधि तुव सब काजा॥
अब मैं कहूँ तोरथको जैहों । तहां भजन करि राम रिझैहों ॥
सुनि नृप यह मेरे मुखवानी । सादर विनय कियो युतरानी ॥

दोहा—इत कवीर साहेब करिय, कछु वासरलों वास ॥

वचन सुनन कछु आप मुख, हमको परमहुलास १९॥

व्याघ्रदेवको होत भो, कछु दिन माहँ विवाह ॥

तब सुलंक नरनाह मन, मान्यो परमउछाह ॥ २० ॥

हरिगीतिकाछंद-पुनिध्यान मेंमैंइकसमयकीन्हीविनयरघुवीरसों॥

निज अंशते युग हंस दीजै कृपा करि मन धीरसों ॥

प्रगटै वघेले वंश मँहँ जेहिते बयालिस वंशलों ॥

करि अचल राज्य वघेल राजा लहै गति तुव अंशलों१॥

तब ध्यानहीं में कह्यो रघुवर हंस जे द्वै द्वापरै॥

ममलोक तुम लाये अहौ गिरिनारके अति आदरै ॥

ते भूप रानी दोउको जगती तलै प्रगटाइये ॥

मम ज्ञान करि उपदेश जिय हिय भक्ति मेरी छाइये२

सुनि ध्यान में यह राम मुख नृप व्याघ्रदेव सुरानिको॥

सब संत चरणोदकपिआयो होय सुत कहि वानिको ॥
 पुनि वैश्य क्षत्री जाति कोउ तेहि तीयको सुख छाड़कै ॥
 सब संत चरणोदक पिआयो गर्भ युत भइ जायकै ३ ॥
 जब समय आयो सुत जनमभो शुभ मुहूरत तेहिदिनै ॥
 तब व्याघ्रदेव भुवाल तिय जनम्यो अनूपम यकतनै ॥
 तेहि नाम में जयसिद्ध कीह्यो भयो मोद अपारहै ॥
 दै दान बहु सन्मान किय द्विज व्याघ्रदेव उदारहै ॥ ४ ॥
 कछुदिवश वीते वैश्य तियके यक सुता प्रगटत भई ॥
 अति सुभग अतिहि सुशील मानहु रमा जगमें निर्मई ॥
 जब भये दोउ सयान कछु तब होत भयो विवाह है ॥
 नित नयो दिन प्रति भूप उर आत बढ़त भयो उछाहहै ५
 दोहा—कह मैं आदि बघेलकी, सुनिये राजाराम ॥

जिमि नभ रवि तिमि वंश तुव, जग प्रगटिहि अभिराम २ १
 सुनिकै मूल बघेलको, अति सुखपाय नरेश ॥

पुनि पूछ्यो प्रभु भांतिकेहिं, ते आये यहि देश ॥ २२ ॥

कवित्त—कह्यौ श्रीकवीर सुनो राजाराम बैन मेरो जयसिद्ध
 भयो जब कछुक सयानहै ॥ साधु संगहीं में निज मनको लगाय
 करि सुनि सुनि मानै मेरो वचन प्रमानहै ॥ मोसों कह्यो नाथ
 मोहिं शिष्य कीजै दीजे मंत्र कह्यो तब मैं हूं तू तो भूप वडो जानहै ॥
 नृपतिसुलंक ज्यों, समाज जो ज्यों त्यों समाज जोरै करौं शिष्य जा
 नैं सकल जहान है ॥ १ ॥ आयसुको मानि संत पण्डित समाज जो-
 ज्यों सकल मैं गाइ साज महा मोद छाड़कै ॥ सवासेर मोतिनकी
 चौक पुरवायनीकी पितामहत्योहीं पितै सभामें बोलायकै ॥
 आरती सँवारि कियो जयसिद्ध भूपकाहि कीह्यो तब शिष्य

कह्यो वचन सुनायकै॥भूप जयसिद्ध तुम पूर्व गिरिनारकेहौ हंस
राम लोकहीके प्रगटे ह्यां आयकै ॥२॥

दोहा-वंश बयालिस चलैगो, तुमते नृप जयसिद्ध ॥

वांधोगठ तुव वंशके, हैहै साह प्रसिद्ध॥२३॥

छत्र मुकुटधारी नृप है कै । सुयश प्रताप हुहुमि अति छैकै ॥
द्वितीय जन्म वांघव गढ़तेरो । हैहै पैहै दर्शन मेरो ॥
दै ताको यह आशिर्वादा । विदा कियो दै करिपरसादा ॥
पुनि सब साधुन विप्रन काहीं । दै प्रसाद किय विदा तहाहीं ॥
नृप जयसिद्ध धाम निज जाई । एक दिन पौढ़े सेज सोहाई ॥
कियो शंक नहिं कोषनदेशू । नहिं चाकर यह बड़ो अँदेशू ॥
चलिहै किमि जग नाम हमारो । नहिं कबीर वर मृषा विचारो ॥
करत करत यहि भांति विचारा । होतभयो जवहीं भिनसारा ॥

दोहा-सपदि भूप जयसिद्ध तव, जाय जनकके पास ॥

विनय कियो करजोरिकै, मोहि यह परमहुलास॥२४॥

करि महि अटन तीर्थ सब करहूँ । परमप्रमोद हिये महुँ भरहूँ ॥
करै न धर्म धरै धन जोरी । क्षत्रीहै करतो धन चोरी ॥
तेहि नृप तेजअंश घटिजाई । ताते धर्म करै मनलाई ॥
करै नीति रण पीठि न देई । सो नृप अनुपम यश महिलेई ॥
यह सुनि सब बघेल सुख पायो । पितु प्रसन्नहै वचन सुनायो ॥
जाहुहमारे पितुके पासा । कहौ करै जस हुकुम प्रकासा ॥
यह सुनिकै जयसिद्ध भुवाला । जाय पितामह निकट उताला ॥
शीश नवाय उभय कर जोरी । विनय कियो यह इच्छा मोरी ॥

दोहा-जात अहौं तीरथ करन, दीजै नाथ रजाय ॥

तब सुलंक नृप पौत्रसों, कह्यो गोद बैठाय ॥ २५ ॥

कौन कलेश परयो तुमकाहीं । जो निज राज्य रहतहौ नाहीं ॥

यह तुव सिगरी राज्य ललामा । का परदेश जानको कामा ॥
 सुनि जयसिद्ध कही तब बाता । देहु राज्य दोउ पुत्रन ताता ॥
 काम न मम तुव राज्यहि तेरे । करिये विदा यही मन मेरे ॥
 तिहरो यश जगमें अति होई । नहिं निंदा करिहै जन कोई ॥
 तब कबीर वरदान प्रभाऊ । गुणि सुलंक नृप भरि अति चाऊ ॥
 युगल उत्तंग मतंग निवेरे । तीस तुरंग तवेले केरे ॥
 तिनको नीकी भाँति सजाई । द्रव्य ऊँट द्वै तुरत भराई ॥

दोहा—वीर महारणधीर जे, काल सरिस सरदार ॥

तिनको तिन सँग करत भे, औरहु चमू अपार ॥२६॥
 सुदिन शोधि जयसिद्ध नरेशा । पितु मातहिं किय खातिर वेशा ॥
 पुनि रानी अतिशय विलखानी । महुँ संग चलिहौं कह बानी ॥
 जहां धर्म रहती तहँ माया । जहाँ रूप रहती तहँ छाया ॥
 लै तिय सँग मोहिं शीशनवाई । मोसों बहुत आशिषा पाई ॥
 दशराकेदिन किय प्रस्थाना । पुरलोगनको करि सन्माना ॥
 कह कबीर पुनि मो ढिग आई । कीन्ही विनय प्रमोद बढाई ॥
 प्रभु मोहिं जिमि दीन्ह्यो वरदाना । तिमि मम सँग कीजिये पयाना ॥
 तब मैं सुनि यह ताकरि बानी । हँसिकै वचन कह्यो सुखमानी ॥

दोहा—तुम सेवा अति मम करी, दोउ जन्मके मोर ॥

भक्त अहौ ताते चलहुँ, संग तजौं नहिं तोर ॥ २७ ॥

विजय मुहूरत अबहिं नृप, गुणि मम वचन प्रमान ॥

मुदित निसान बजायकै, वेगिहिं करहु पयान ॥२८॥

छंद—वर मानि मोर निदेश, जयसिद्ध नाम नरेश ॥

पितु पितामह ढिग जाय, बहु भाँति शीशनवाय ॥१॥

स्वरदाहिनो नृप साधि, चढ़ि चलयो हय सुख कांधि ॥

तेहिं समय पुरजन यूह, जुरि दिय अशीश समूह ॥२॥

जस देश यह गुजरात, तसदेश लहो विख्यात ॥
 तुव उपर देवी मात, रक्षक रहै दिन रात ॥ ३ ॥
 तिमि रानि भरि अति चाउ, परि सासु ससुरहि पाउ ॥
 कह छोंड़ियो नहिं छोह, नहिं किह्यो कबहुँ कोह ॥ ४ ॥
 पुनि रानि युत जयसिद्ध, यश जासु जगत, प्रसिद्ध ॥
 मोहिं सहित साधु समाज, संगलै चमू छवि छाज ॥ ५ ॥
 किय गवन मग रणधीर, तनु धरे मनु रसवीर ॥
 बिच बीच पथ करि वास, पुरगढ़ा कोसहुलास ॥ ६ ॥
 पहुँच्यो महीश सुजान, लिय भूप तहँ अगवान ॥
 निज महल गयो लेवाय, दिय नजर बहु सुख छाया ॥ ७ ॥
 जयसिद्ध पुनि नरराय, सरि नर्मदामें जाय ॥
 तिय सहित करि स्नान, धन अमित दीन्ह्यो दान ॥ ८ ॥
 दोहा—चकरनको दै चाकरी, कछु दिन सहित हुलास ॥
 तीर नर्मदा सर्मादा, करत भयो नृपवास ॥ २९ ॥
 तहँ जयसिद्ध भुवालके, कर्णदेव भो सून ॥
 सबके उर आनँद उदधि, अधिकानो तब दून ॥ ३० ॥
 सेवक द्विज गण साधु को, भयो सो अति मतिवान ॥
 नीतिवान सब प्रजनको, पाल्यो प्राण समान ॥ ३१ ॥
 कछु दिनमें जयसिद्ध भुवाला । कूच कियो लै सैन्य विशाला ॥
 तीरथ चित्रकूटमें आई । पयस्वनीमें सविधि नहाई ॥
 विविध प्रकार दान तहँ दीनो । सुत कलत्र युत अति मुद भीनो ॥
 तहँऊते चलि नृप सुख छायो । कहुँ थल भल लखि नगर बसायो ॥
 कछुक दिवश तहँ कियो निवास । साधुन विप्रन देत हुलासा ॥
 वैस वैसवारेके देखे । बसे डोरियाखेराहिं बेसे ॥
 पुरी गेरि तिनके घर माहा । कर्णदेवको कियो विवाहा ॥

परमानंद मानि तहँ राजा । विप्रनको दिय दान दराजा ॥

दोहा—जय जय जय ध्वनि है रही, पुहुमीमें सब द्रीप ॥

कर्णदेवके होतभो, हलकेहरी महीप ॥ ३२ ॥

कछुक दिवश तहँ कियो निवासा । दिन दिन बढ़ो प्रताप प्रकासा ॥
कर्णदेवको दैकर राजू । नृपजयसिद्ध छोड़ि जग काजू ॥
तीरथ वसि ब्रह्मांडहिं फोरी । देह छोड़ि दै दान करोरी ॥
हरिके लोक जाय किय बासा । तनु तजि गई रानि तेहिं पासा ॥
मृतकक्रिया करि विविध प्रकारा । कर्णदेव दिय दान अपारा ॥
हलकेहरी तनय पुनि जायो । नाम केहरी तासु धरायो ॥
तिनको कियो विवाह सप्रीती । जीति देश बहु मेटि अनीती ॥
निज पितु कर्णदेव नृपकाही । राखि चित्रकूटहि सुखमाही ॥

दोहा—राज्यगहोराको कियो, हलकेहरी सुजान ॥

तनय केहरीसिंह तेहि, तहँते कियो पयान ॥ ३३ ॥
गयो कलिंजरदेश मँझारा । तहँको कियो मिलाप भुवारा ॥
पुनि केहरीसिंह बलवाना । उत्तर दिशिकहँ कियो पयाना ॥
विदित पठान राजजहँ रहई । रहे पठान प्रबल तहँ महँई ॥
तेलरिबेको कियो विचारा । कुपित जनन सों वचनउचारा ॥
कहौ कहाँके को ये आहों । आवत सदल पुरी मम काहीं ॥
ते सब कहे जोरि युग हाथा । जो हम सुनत सुनावत नाथा ॥
ये बघेल गुजराताहि केरे । भूप प्रतापी अहँ बड़ेरे ॥
सुनि पठानअतिकोपहिछायो । फौज जोरि बहु हुकुम जनायो ॥

दोहा—लूटि लेहु रिपु सैन्य पुर, आवन पावै नाहि ॥

नाकन दिय लगवाय बहु, तुरतहि तोपन काहि ॥ ३४ ॥

सोरठा—यह हवाल सुनि कान, कह्यो केहरीसिंह हैंसि ॥

नाहक किय रणठान, जान न पावैं जानले ॥ १ ॥

दोहा-वीरनको दीन्ह्यो हुकुम, ते अति क्रोधहि छाया॥

धाय जाय चहुँ ओरते, हने पठानन काय॥३५॥

परें बाव जिमि गाय समूहा । भागैं तिमि भागे रिपु यूहा ॥
तोपनको द्रुत लियो छँड़ाई । हनिगे बहु पठान समुदाई ॥
हाहाकार करत बहु भारी । वार वार यह कहत पुकारी ॥
होहु पनाह खुदा अल्लाहा । खात बबल सरिस बननाहा ॥
आरत वचन सुनत तिनकेरो । लहि नवाब उर शोक वनेरो ॥
द्रुतकेहरीसिंह ढिग आयो । बहु सलाम करि शीश नवायो ॥
बिनती कियो हाथ पुनि जोरी । आधी राज्य लेहु प्रभु मोरी ॥
कह केहरीसिंह तिन पाहीं । हम तुव राज्य लेतहैंनाहीं ॥

दोहा-लिरुयो विधाता होयगो, राज्य हमारे भाल ॥

साहेब हमको देइगो, तौ करि कृपा विशाल ॥ ३६ ॥

सुनि नवाब तिनकी यह बानी । दिय बैठाय राज्य सुख मानी ॥
कह्यो देश सबकोष तुम्हारा । हम चाकर ह्वै रहन विचारा ॥
तुमहीं राजा अहौ हमारे । निशि दिन सेवन करव तिहारे ॥
भये खुशी केहरीसिंह सुनि । करि नवाबको अति खातिर पुनि ॥
भवन जानकी दई विदाई । गयो सो वार वार शिरनाई ॥
नृप केहरीसिंह सहुलासा । कछु वासर तहँ कियो निवासा ॥
सरदारनको करि सन्माना । सब चकरनको सहित विधाना ॥
दिय चिठ्ठा चाकरी चुकाई । वसे सबै सेवा मनलाई ॥

दोहा-तहां केहरी सिंहके, मालकेसरी पूत ॥

होत भयो जाके वदन, वसी सरस्वता पूत ॥ ३७ ॥

उभय मल्लको जोर तनु, सुंदर तेज विधान ॥

कछु दिनमें तेहि व्याहकरि, दीन्ह्यो दान महान ॥ ३८ ॥

फेरि व्यतीत भये कछुकाला । तनु तजि करि केहरी भुवाला ॥

वास कियो वासवपुर माही । मालकेसरी सपदि तहांही ॥
 विधि युत मृतकक्रिया पितुकेरो । करि दीन्ह्यो तहँ दान वनेरो ॥
 मालकेसरी कछु दिन माहीं । उपजायो सुंदर सुत काहीं ॥
 सारंग देव नाम तेहि भयऊ । सुयश प्रताप नाम तेहि ठयऊ ॥
 भीमलदेव भयो सुत तासू । फैलि रह्यो जगमें यश जासू ॥
 हरिगुरुको भो भक्त महाना । पाल्यो परजन प्राण समाना ॥
 ब्रह्मदेव ताके सुत जायो । सो निज पितुसों वचन सुनायो ॥

दोहा—आपकीजिये भजन हरि, सुचित भौन करि वास ॥

मोहिं दीजिये फौज सब, करि उर कृपा प्रकाश ॥३९॥

कछु दिन सैर करौं महि माहीं । प्रगटहुँ नाम रावरे काहीं ॥
 सुनि नृप भीमलदेव उदारा । ब्रह्मसूनु सों वचन उचारा ॥
 मनमें यह विचार किय नीको । करै सुपूती सोइ सुत ठीको ॥
 जगमें नहिं कुपूत कहवायो । अस करतूति करन मन लायो ॥
 ब्रह्मदेव सुनि ये पितु वैना । करी तयारी भरि अतिचैना ॥
 चतुरंगिनी चमू सँग लैकै । कियो पयान धीररस म्वैकै ॥
 राज्य गहरवारनके आये । कछु वासर तहँ वसि सुख छाये ॥
 पुनि सिधाय शिरनेतन देशू । तहँ विवाह किय ब्रह्म नरेशू ॥

दोहा—कछुक दिवश शिरनेतनृप, सेवा करि युत प्रीति ॥

ब्रह्मदेव सों समय गुणि, कछ्यो विनयकी रीति ॥४०॥

यक मम भाई देश हमारे । गनत न हमहिं भये बलवारे ॥
 तिनको दंड दीजिये नाथा । तौ हम वसैं राज्य सुख साथ ॥
 ब्रह्मदेव यह सुनि तेहिं वानी । कह नर पठैलेहिं हम जानी ॥
 पुनि नृप ब्रह्मदेव रिस छायो । पाती यक ऐसी लिखवायो ॥
 ग्यारहसै नेजा सँग लीन्हे । आवत तुव दरशन मन दीन्हे ॥
 हैं बघेल हम विदित जहाना । तुम शिरनेत अनुज बलवाना ॥